॥ॐ॥

।। श्री महा स्वामी याग ।।

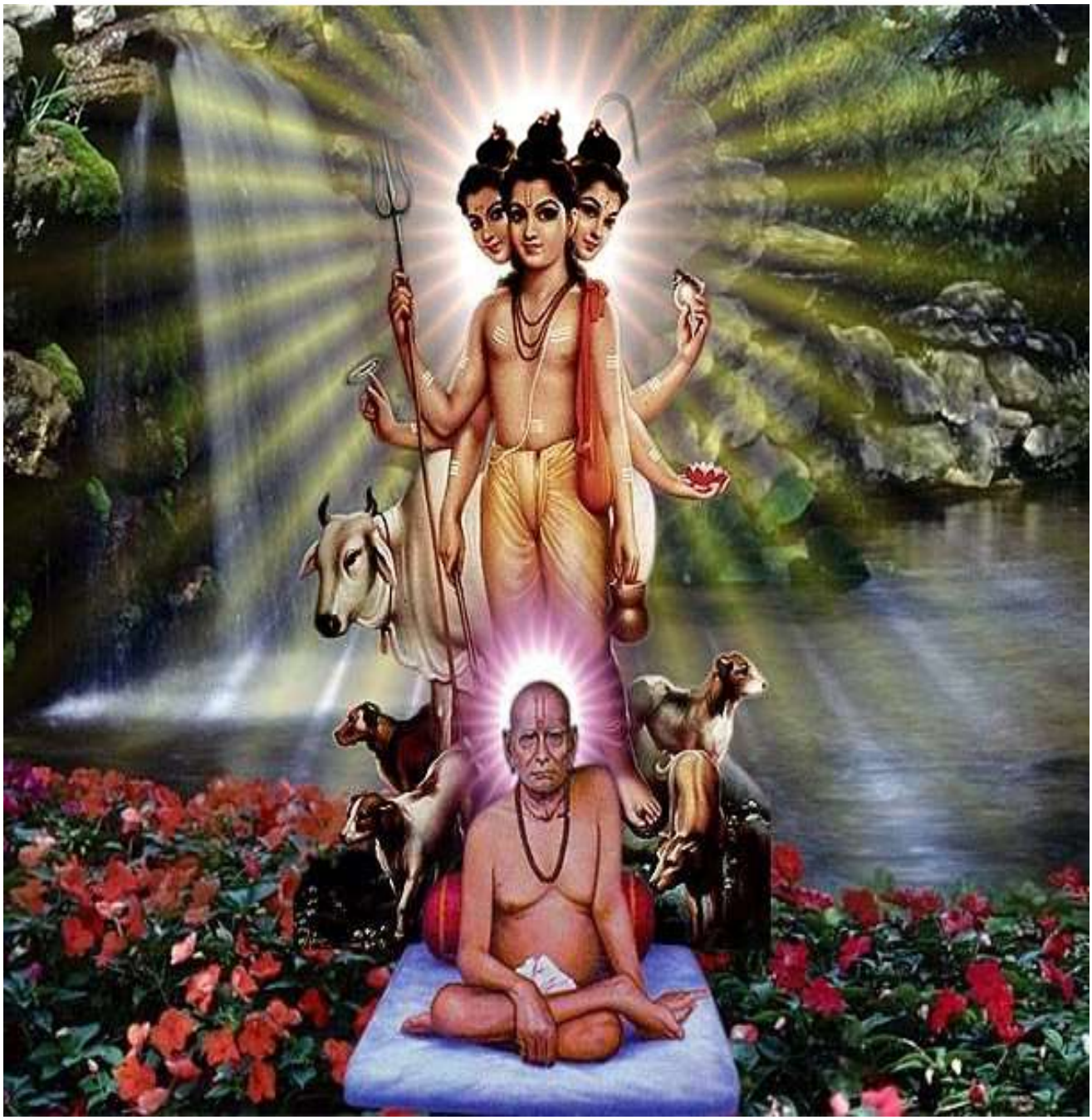

ऋण निर्देश

श्री स्वामी समर्थ - अक्कलकोट यांचे शिष्य -
ब्रह्मनिष्ठ वामनबुवा वामोरीकर वैद्य यांनी
श्री गुरु दिव्य सहस्त्रनाम स्तोत्र मंत्र रचले.
हेच मंत्र श्री महा स्वामी यागाचा आधार आहेत.
काही मंत्रांची त्रृटी होती,
ते मंत्र श्री स्वामींच्या सुचनेनुसार घेतले आहेत.

श्री महा स्वामी याग - श्री स्वामी समर्थ (अक्कलकोट) यांचा संदेश |

प. पू. सद्गुरू दादाश्री - मोहन जाधव यांना श्री स्वामींनी श्री स्वामी दिव्य सहस्त्र नाम मंत्राच्या यज्ञाचे आयोजन करण्याचा आदेश दिला. त्यानुसार ही यज्ञ संहिता तयार केली. श्री स्वामी समर्थ समाधी मठ - अक्कलकोट आणि अमेरिकेत ऑस्टिन, टेक्सास येथे श्री महा स्वामी यागाचा शुभारंभ ९ सप्टेंबर २०१८ रोजी झाला. त्या यागा नंतर श्री स्वामींचे आलेले संदेश खालील प्रमाणे आहेत.

अक्कलकोट में हमारे सानिध्य में शुरू किये गये यज्ञ की पूर्णाहुति और ऑस्टिन में स्वामीमय सद्गुरु के सानिध्य में हुई | हम थे कर्ता, हम थे आहुति और हम थे स्वामी | हर मंत्र के उच्चारण के साथ वह मंत्र मूर्तिमंत प्राणयुक्त हुए | इस से सातों लोक प्रभावित हुए | स्वर्णयुग के लिए यह यज्ञ हमारा वरदान है |

अत्यंत शुचिता एवम् भक्ति से किया तो यह यज्ञ सर्व इष्टदायी है | यह यज्ञ के लिए कोई वर्ण या जाति की पाबंदी नहीं है | श्रद्धा, भक्ति और समर्पण भाव से जो भी इसे करेगा वह अति भाग्यवान है | श्रद्धा और भक्ति, उद्धार के ज्योति मार्ग में आप के साथी है |

श्री महा स्वामी यज्ञ की अत्यंत महिमा है | अग्निहोत्र जैसे यह यज्ञ भी पंचसाधन - यज्ञ, दान, तप, कर्म और स्वाध्याय का एकरूप है | अत्यंत शुचिता एवम् प्रेम से किया जाय तो यह यज्ञ अमृत वर्षिणी है| जिधर भी यह यज्ञ किया जाता है, वहाँ गंगा की पवित्र निर्मलता प्रवाहित होती है | सात्विकता की वृद्धि होती है |

इस यज्ञ की विधी सुनो |

व्याहृति, गुरु वंदना एवम् अग्नि आवाहन के उपरान्त भार्गव कवच धारण करना अति अनिवार्य है | भार्गव कवच वज्र कवच है | श्री महा स्वामी यज्ञ सबसे श्रेष्ठ दान है | कवच धारण करने के उपरान्त पुरुषसूक्त, गणपति अथर्वशीर्ष के साथ श्री महा स्वामी यज्ञ का शुभारंभ होता है | विधी पूर्वक श्री महा स्वामी दान, देवी अथर्वशीर्ष, श्रीसूक्त, कालिका, कुञ्जिका और महामृत्युंजय मंत्र से संपूर्ण होता है |

श्री महा स्वामी याग को अग्निहोत्र के साथ किया जाय | अग्निहोत्र से आरंभ या अग्निहोत्र से भी समाप्त किया जा सकता है |

महा स्वामी यज्ञ परम श्रेष्ठ दान है | दान में मनुष्य प्राण, ध्यान, द्रव्य, पुष्प या धान्य का अर्घ्य देते है | इस यज्ञ के लिए अगर द्रव्य, धान्य, पुष्प या घृतम जैसे पदार्थ उपलब्ध नहीं है तो, केवल प्राण आहुति भी पर्याप्त है | अर्थात आपने परम प्रेम, एकाग्रता और निष्ठा से इन मंत्रों का उच्चार किया तो वह प्राणयज्ञ बनता है | यह भी हमे स्वीकार है |

लेकिन यह प्राणयज्ञ भी अग्निहोत्र के साथ करना है | अग्निहोत्र अति अनुपम यज्ञ है, जिसमे प्राणी दान, तप, कर्म और स्वाध्याय भी करते है | अग्निहोत्र और महा स्वामी याग में परमात्मा को दान दिया जाता है | इस ब्रह्मांड में परमात्मा के अतिरिक्त और कौन दान के सुपात्र हो सकते है? इसिलिये इन दो यज्ञों का इतना महत्व और प्रभाव है |

अग्निहोत्र की और अप्रतिम विशेषता है | यही एक यज्ञ है जो संक्रमण काल में होता है, जब मनुष्य की सुषुम्ना नाडी सक्रिय है | सुषुम्ना अपरोक्ष अनुभुति का ज्योति मार्ग है | महा स्वामी यज्ञ का दान अग्निहोत्र के साथ किया गया, तब परमात्मा की कृपा से मनुष्य की साधना में उन्नती होती है | जीवन शुभमय, स्वामीमय होता है | महा स्वामी यज्ञ के दान की ऊर्जा, अग्निहोत्र के साथ सारे ब्रह्मांड में फैलती है | विश्वकल्याण के साथ साथ मनुष्य का आत्मउद्धार भी होता है | यही महा स्वामी यज्ञ और अग्निहोत्र का रहस्य है | शांति का इससे सरल उपाय और कुछ नहीं |

श्री महा स्वामी यज्ञ का एक आवर्तन सहस्त्रअतिरुद्र, शतकोटी चंडियाग एवम् सहस्त्र महासोम याग का फल देता है | इस यज्ञ का संकल्प केवल विश्वकल्याण है | श्री महा स्वामी याग साधक को शांति देगा, समृद्धी देगा एवम् सर्व सौभाग्य देगा | जगत् उध्दार एवम् विश्वकल्याण ही हमारा एकमात्र लक्ष्य है |

ब्रह्मांड में केवलम् एक मात्र सत्य है और वह है हमारा सत्यस्वरुप |
मानव कल्याण के लिए अपने आप में निहित सत्यज्ञान को जानो |
शुभमस्तु | कल्याणमस्तु | हरिः ॐ तत् सत् |

अनुक्रमणिका

क्र.		पृष्ठ
१)	न्यासः	१
२)	व्याहृति होम	२
३)	गुरु वंदना	२
४)	वेदोक्त गणपति ध्यान, आवाहन, प्राणप्रतिष्ठा मंत्र	३
५)	वेदोक्त अग्नि ध्यान, आवाहन, प्राणप्रतिष्ठा मंत्र	३
६)	व्याहृति होम	३
७)	श्रीभार्गवकवचम्	४
८)	पुरुषसूक्त स्वाहाकार	११
९)	विष्णूसूक्त स्वाहाकार	१३
१०)	गणपति अथर्वशीर्ष स्वाहाकार	१६
११)	श्री महा स्वामी याग स्वाहाकार	१७
१२)	देवी अथर्वशीर्ष स्वाहाकार	५१
१३)	श्रीसूक्त स्वाहाकार	५४
१४)	माँ मंगल चण्डिका मंत्र स्वाहाकार	५६
१५)	महामृत्युंजय मंत्र स्वाहाकार	५६
१६)	व्याहृति होम	५६
१७)	पूर्णाहुती मंत्र	५७
१८)	शांति मंत्र	५७
१९)	सप्तश्लोकी	५७

।। श्री महा स्वामी याग ।।

(श्री महास्वामी याग करतांना अग्निहोत्र करणे जरुरी आहे.)

|| अनंतकोटी ब्रह्मांडनायक राजाधिराज योगीराज
श्री सच्चिदानंद परब्रह्म सद्गुरू श्री स्वामी समर्थ महाराज की जय ||
|| अवधूत चिंतन श्रीगुरुदेव दत्त ||
|| स्वामी ॐ ||

श्री गणेशाय नमः श्री स्वामी समर्थाय नमः श्री मत्सद्गुरुदिगम्बरस्वामिने नमः

ॐ अस्य श्री सद्गुरुदिव्यसहस्त्रनामस्त्रोत्रमंत्रस्य शिष्यो ऋषि: मन्त्रश्छन्द :
गुरुर्देवता, सोऽहं बीजम्, अहं शक्तिः
अथ न्यासः -
गुं अंगुष्ठाभ्यां नमः
रुं तर्जनीभ्यां नमः
दं मध्यमांभ्यां नमः
नं अनामिकाभ्यां नमः
मं कनिष्ठिकाभ्यां नमः
सं करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः

गं हृदयाय नमः
रुं शिरसे स्वाहा
वं शिखायैवषट्
नं कवचाय हुम्
मं नेत्रत्रयाय वौषट्
सं अस्त्राय फ़ट्
गुरुप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः

(स्वाहा उच्चारल्या नंतर गायीच्या तुपाची आहुति अग्निला अर्पण करावी.)

व्याहृति होम

भूः स्वाहा अग्नये इदं न मम | भुवः स्वाहा वायवे इदं न मम |
स्वः स्वाहा सूर्याय इदं न मम | भू र्भुवः स्वः स्वाहा प्रजापतये इदं न मम ||

गुरु प्रार्थना

ॐ श्री गुरुभ्यो नमः
गुरुर्ब्रम्हा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः | गुरुर्साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः ||
ब्रह्मानंदं परमसुखदं केवलं ज्ञानमूर्तिम् | द्वन्द्वातीतं गगनसदृशं तत्वमस्यादि लक्ष्यं |
एकं नित्यं विमलं अचलं सर्वधी साक्षिभूतं | भावातीतं त्रिगुणरहितं सद्गुरुं तन्नमामि ||

गुरु स्तुति

ॐ नमस्ते श्रीगुरु सर्व लोकाश्रयाय | नमस्ते सद्गुरु विश्वरूपात्मकाय ||
नमो अद्वैत तत्वाय मुक्तिप्रदाय | नमो सद्गुरु ब्रह्मणे निर्गुणाय ||१||

त्वमेकं शरण्यं त्वमेकं वरेण्यम् | त्वमेकं जगत् कारणं विश्वरूपम् ||
त्वमेकं जगत् कर्तृपाताप्रहर्ता | त्वमेकं परं निश्चलं निर्विकल्पम् ||२||

त्वं अचिन्त्यं अव्यक्तं परब्रह्म स्वरूपम् | त्वं अनंतं प्रशान्तं अमृतं ब्रह्मरूपम् ||
त्वं आदिमध्यान्तरहितं चिदानन्दरूपम् | त्वं सनातनं शाश्वतं ब्रह्मरूपम् ||३||

जगद्गुरु विश्वकर्ता महात्मा | सदा संस्थितः हृदये मम ||
हृदा मनीषः मनसाभिक्लृप्तो | य एतद् विदुर अमृतास्ते भवन्ति ||४||

त्वं ईश्वराणां परमं महेश्वरम् | त्वं देवतानां परमं च दैवतम् |
परेशं प्रभो सर्व विश्वा प्रकाशी | भवाम्भोधिपोतं शरण्यं व्रजामः ||
पुनरपि शरण्यं व्रजामः | पुनः पुनरपि शरण्यं व्रजामः ||५||

वेदोक्त गणपति ध्यान, आवाहन, प्राणप्रतिष्ठा मंत्र

श्री गणेशाय नमः ||
ॐ गणानां त्वा गणपतिगँ हवामहे कविं कवीनामुपमश्रवस्तमम् |
ज्येष्ठराजं ब्रह्मणाम् ब्रह्मणस्पत आ नः शृण्वन्नुतिभिःसीदसादनम् ||
ॐ श्री महागणाधिपतये नमः ||

वेदोक्त अग्नि ध्यान, आवाहन, प्राणप्रतिष्ठा मंत्र

ॐ चत्वारि शृंगा | त्रयो अस्य पादा | द्वे शीर्षे सप्त हस्ताऽसो अस्य |
त्रिधा बध्दो वृषभो रोरवीति | महोदेवो मर्त्यां आविवेष ||

व्याहृति होम

भूः स्वाहा अग्नये इदं न मम | भुवः स्वाहा वायवे इदं न मम | स्वः स्वाहा सूर्याय इदं न मम |
भू र्भुवः स्वः स्वाहा प्रजापतये इदं न मम ||

|| श्रीभार्गवकवचम् ||

|| श्रीगणेशाय नमः ||

श्रीनारायण उवाच

कैलासशिखरे रम्ये शंकरं लोक शंकरम् |
कैवल्यचरणं गौरी पप्रच्छ हितमद्भुतम् || १ ||

पार्वत्युवाच

देवदेव महादेव देवेश वृषभध्वज | त्वत्तः श्रुतान्यशेषाणि जामदग्न्यस्य साम्प्रतम् || २ ||
हरेरंशावतीर्णस्य मन्त्रयन्त्रादिकान्यलम् | न श्रुतं कवचं देव न चोक्तं भवता मम || ३ ||
वक्तुमर्हसि देवेश भक्तायै गुह्यमप्युत | इति पृष्टः स गिरीशो मन्त्रयन्त्राङ्गतत्ववित् || ४ ||
उवाच प्रहसन्देवीं हिताय जगतामिदम् | रहस्यमपि हि ब्रूयुर्लोकैकहितदृष्टयः || ५ ||

शिव उवाच

श्रुणु प्रिये प्रियमिदं मम गुह्यतरं परम् | धर्मार्थकाममोक्षाणामनायासं सुसिद्धिदम् || ६ ||
एकमौपयिकं मन्ये विष्णुवक्षःस्थलालयाम् | श्रियमाक्रष्टुकामानामिदं कवचमुत्तमम् || ७ ||
एकातपत्रसहितां य इच्छेत्सागराम्बराम् | स जामदग्न्यकवचं नित्यमावर्तयेन्नरः || ८ ||
उद्दण्डशस्त्रदोर्दण्डप्रचण्डरिपुमण्डलम् | कथं जयेयुर्वीरेन्द्राः कवचानावृताङ्गकाः || ९ ||
परप्रयुक्तकृत्यादिदोषा भूतादयोऽपि वा | प्रयान्ति भीता रामस्य वर्मणा वीक्ष्य रक्षितम् || १० ||
किमन्यैः कवचैर्देवि किमन्यैर्मनुभिश्च वा | जामदग्न्यः परं यस्य दैवतं भृत्यवत्सलः || ११ ||
कवचस्यास्य गिरिजे ऋष्यादिन्यासकल्पनम् | मूलमन्त्रोक्तविधिना कारयेत्साधकोत्तमः || १२ ||
(अस्य श्रीभार्गवकवचस्तोत्र मंत्रस्य)अङ्गिरा ऋषिः बृहती छन्दः | श्रीमाञ्जामदग्न्यो देवता
(श्रीभार्गवरामप्रीत्यर्थे भार्गवकवचस्तोत्रजपे विनियोगः) ||

अथ करन्यासः

रां रामाय नमः अंङ्गुष्टाभ्यां नमः || रां रामाय नमः तर्जनीभ्यां नमः ||
रां रामाय नमः मध्यमाभ्यां नमः || रां रामाय नमः अनामिकाभ्यां नमः ||
रां रामाय नमः कनिष्टिकाभ्यां नमः || रां रामाय नमः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ||

अथ षडङ्गन्यासः

रां रामाय नमः हृदयाय नमः || रां रामाय नमः शिरसे स्वाहा ||
रां रामाय नमः शिखायै वषट् || रां रामाय नमः कवचाय हुम् ||
रां रामाय नमः नेत्रत्रयाय वौषट् || रां रामाय नमः अस्त्राय फट् ||

अथ ध्यानम्

उद्दोर्दण्डचलत्कुठारशिखरस्फारस्फुलिङ्गाङ्कुर |
व्रातामोघमहास्त्रनाशित्जगद्विद्वेषिवंशाटवीम् |
वन्दे भार्गवमुग्रकार्मुकधरं शांन्तं प्रसन्नानं |
वीरश्रीपरिचुम्ब्यमानमहितस्वब्रह्मतेजोनिधिम् || १३ ||

ॐ जामदग्न्यः शिरः पातु पातु मूर्धानमूर्ध्वदृक् |
ललाटं ललितः पातु भ्रुवौ भृत्यार्तिनाशनः स्वाहा || १४ ||

श्रवसी सुश्रवा मेऽव्यात्कर्णौ कर्णान्तलोचनः |
नेत्रे गोत्रार्तिहा मेऽव्याल्लोचने भवमोचनः स्वाहा || १५ ||

गण्डे मे खण्डपरशुः कपोलौ पातु शीलवान् |
नासे सुनासः पायान्मे, नासिके दासवत्सलः स्वाहा || १६ ||

रसनां रसरुपोऽव्याद्रसज्ञां रेणुकासुतः |
अधरौ पातु मे नित्यमधरीकृतशात्रवः स्वाहा || १७ ||

वक्त्रं चित्रचरित्रोऽव्याद्दन्तान्दन्तींद्रविक्रमः |
चुबुकं रिपुजित्पातु ग्रीवां श्रीवत्सलाञ्छनः स्वाहा || १८ ||

स्कंधौ मे स्कंदविजयी कक्षे मे क्षत्रियान्तकः |
भुजौ मे सततं पातु सहस्त्रभुज शासनः स्वाहा || १९ ||

करौ हितकरः पातु पाणी क्षोणीभरापहः ।
अङ्गुलीर्मङ्गलगुणो नखानि मखकृन्मम् स्वाहा ।। २० ।।

वक्षः पातु ममाभीक्ष्णं क्षतजाभिषवप्रियः ।
उरः पुरुषवीरो मे पार्श्वौ पातु परश्वधी स्वाहा ।। २१ ।।

उदरस्थजगत्पायादुदरं मम सर्वदा ।
भयापहोऽव्यान्नाभिं मे मध्यं निध्यातविष्टपः स्वाहा ।। २२ ।।

लिङ्गं शंकरशिष्योऽव्यादुपस्थं निस्तुलप्रभः ।
पाय्वपानं च मे पायात्सायकासनवान्सदा स्वाहा ।। २३ ।।

त्रिः सप्तकृत्वः कुलहा त्रिकं मेऽवतु सर्वदा ।
परमेष्ठ्यवतात्पृष्ठं पिठरं दृढविक्रमः स्वाहा ।। २४ ।।

उरु मेरुसमः पातु जानू मे जगतां पतिः ।
जङ्घे संघातहन्ताव्यात्प्रपदे विपदान्तकः स्वाहा ।। २५ ।।

पादौ मे पादचार्यव्याच्चरणौ करुणानिधिः ।
पादाङ्गुलीः पापहा मे पायात्पादतले परः स्वाहा ।। २६ ।।

परश्वधधरः पायाद्रामः पादनखानि मे ।
पूर्वाभिभाषी मां पायात्पूर्वस्यां दिशि संततम् स्वाहा ।। २७ ।।

दक्षिणस्यामपि दिशि दक्षयज्ञान्तकप्रियः ।
पश्चिमस्यां सदा पायात्पाश्चात्याम्बुधिमर्दनः स्वाहा ।। २८ ।।

वित्तेशराक्षिताशायां पायान्मां सत्तमार्चितः |
सर्वतः सर्वजित्पायान्ममाङ्गानि भयात्प्रभुः स्वाहा || २९ ||

मनो महेन्द्रनिलयश्चित्तं मे दृप्तनाशनः |
बुद्धिं सिद्धार्चितः पायादहंतामनहंकृतिः स्वाहा || ३० ||

कर्माणि कार्तवीर्यारिर्हेलां हैहयवंशहा |
हरत्वमोघदृङ्मोहं क्रोधं च क्रोधदर्पहा स्वाहा || ३१ ||

श्रियं करोतु मे श्रीशः पुष्टिं मे पुष्टिवर्धनः |
संतानं सततं दद्याद्भृगुसंतानभूरुहः स्वाहा || ३२ ||

आयूंषि मे वितनुतादार्यः परमपुरुषः | आशां मे पूरयत्वाशु कश्यपार्पितविष्टपः |
श्रीमान्परशुरामो मां पातु सर्वात्मना सदा स्वाहा || ३३ ||

इत्येतत्कवचं दिव्यं अभेद्यं मन्त्रयन्त्रिभिः | कथितं देवि ते गुह्यं प्रियेति परमाद्भुतम् || ३४ ||

न नास्तिकाय नादात्रे न चाश्रद्धालवे प्रिये | देयान्नाविनीतायैतन्नाभक्ताय कदाचन || ३५ ||

नाजापकाय नाज्ञात्रे नासत्यवचसे क्वचित् | नामालामन्त्रिणे देवि प्रदेयं नाप्यमन्त्रिणे || ३६ ||

देयं श्रद्धालवे भक्त्या प्रणताय नतात्मने | गुणान्विताय शुद्धाय मन्त्रगोप्त्रे च मन्त्रिणे || ३७ ||

अवश्यमेतज्जप्तव्यं त्रिसंध्यं नियमान्वितैः | मन्त्रावसाने मन्त्रज्ञै रचितं मन्त्रसिद्धये || ३८ ||

वर्मैतच्च जपेन्मन्त्री जपेद्वा सततं मनुः | आसेचितादिव तरोर्फलं नाप्नोति सद्रसम् || ३९ ||

जयकामो भूर्जपत्रे रक्तबिन्दुभिरुज्ज्वलैः | लिखित्वावर्तयेद्रात्रौ कवचं शतसंख्यया || ४० ||

संपूज्य धूपदीपाद्यैर्ध्यात्वा च हृदि भार्गवम् | हस्ते बध्वा रणं गत्वा विजयश्रियमाप्नुयात् || ४१ ||

एवं संप्रस्थितस्यास्य विद्यावादे रणेऽपि वा | वाचस्पतिर्वा शक्रो वा वश्यः स्यात्किमुतापरे || ४२ ||

अथवा तिलकं कृत्वा रक्तक्षोदेन भामिनि | कवचेनाभिजप्तेन गच्छञ्जयमवाप्नुयात् || ४३ ||

श्रीकामस्तु महेन्द्राद्रेर्द्रोणिं गत्वा मनोहराम् | तत्र मण्डलमास्थाय चण्डभानुं विलोकयन् || ४४ ||

जपेदिदं महद्वर्म प्रत्यहं शतसंख्यया | मण्डलान्ते श्रियं श्रेष्ठां लभते भार्गवाज्ञया || ४५ ||

सिद्धयो विविधास्तस्य दिव्यज्योतिर्लतालयः | सिध्यन्ति सिद्धवन्द्यस्य कृपया विस्मयावहाः || ४६ ||

भूतप्रेतपिशाचाश्च रोगाश्च विविधाशुभाः | दुष्टा नृपास्तस्कराश्च व्याघ्रसिंहगजादयः || ४७ ||

श्रीमद्भृगुकुलोत्तंसदंशदंशितमद्रिजे | दृष्टवैव हि पलायन्ते मृत्युं दृष्टवैव हि प्रजाः || ४८ ||

जामदग्न्यस्य यो वाञ्छेत्सान्निध्यं योगिदुर्लभम् | दारिद्र्यदुःखशमनं संसारभयनाशनम् || ४९ ||

स महेन्द्रस्य शिखरे स्नात्वोपस्थाय भास्करम् | तन्मध्यवर्तिनं शान्तं जटामण्डलमण्डितम् || ५० ||

परश्वधधनुर्दण्डराजितांसद्वयान्वितम् | अक्षसूत्रं सुबिभ्राणं दक्षिणेऽङ्गुलिपल्लवे || ५१ ||

वामजानुतलन्यस्तवामपाणिकुशेशयम् | उन्मज्जज्जलजग्रीवमामीलितविलोचनम् || ५२ ||

सुप्रसन्नमुखाम्भोजं सुस्मितं पल्लवाधरम् | सुन्दरं सुंदरापाङ्गं भोगिभोगभुजद्वयम् || ५३ ||

भक्तानुग्राहकं देवं जामदग्न्यं जगत्पतिम् | ध्यायन्तमात्मनात्मानं ध्यायेत्प्रणतवत्सलम् || ५४ ||

अथ द्वादशभिः पुण्यैर्नामभिः पापहारिभिः | जपतामिष्टदैर्भृत्यपारिजातं समर्चयेत् || ५५ ||

जामदग्न्यो जगन्नेता ब्रह्मण्यो ब्रह्मवत्सलः | कार्तवीर्यकुलोच्छेत्ता क्षत्रवंशप्रतापनः || ५६ ||

विश्वजिद्दीक्षितो रामः कश्यपाशासुरद्रुमः | परश्वधधरः शान्तो महेन्द्रकृतकेतनः || ५७ ||

एतैर्द्वादशभिर्दिव्यैर्गौप्यैरभ्यर्च्य नामभिः | उपतिष्ठेत्पुनर्गुह्यैर्मुख्यैर्नामभिरीश्वरम् ||
क्षिप्रप्रसादजननैश्चतुर्वर्गफलोदयैः || ५८ ||

हन्त ते संप्रवक्ष्यामि तान्यपि प्रणतासि यत् | इमानि गौरि नामानि सुगोप्यानि सतामपि || ५९ ||

ॐ हंसस्त्रयीमयो धाता योगीन्द्रहृदयालयः | त्रिधामा त्रिगुणातीतस्त्रिमूर्तिस्त्रिजगन्मयः || ६० ||

नारायणः परं ब्रह्म परं तत्वं परात्परः | भार्गवो धर्मचरणो भर्गरुपः सतां गतिः || ६१ ||

इति षोडशभिः स्तुत्वा नामभिर्ऋषिपुंगवम् | सर्वाशिषां पतिं देवं सकलाभीष्टदायकैः || ६२ ||

आत्मानं विन्यसेदङ्गेष्वनेन कवचेन सः | मृगीमुद्रिकया धीमान्वज्रसारेण सारवित् || ६३ ||

दशवारं प्रतिदिनं मासमेकं समाचरेत् | स्वप्ने पश्यति देवेशं भार्गवं भृगुनन्दनम् || ६४ ||

चिन्तितार्थप्रदं सौम्यं चिन्तामणिमिवापरम् | मासत्रयं तु विन्यस्ते साक्षात्पश्यति जापकः || ६५ ||

मनसः संप्रसादेन लब्ध्वा वरमनुत्तमम् | अणिमादिगुणैर्युक्तो ब्रह्मलोकमवाप्नुयात् || ६६ ||

अथवा योगसिद्धिं यो धातुसिद्धिं च वाञ्छति | कुरुक्षेत्रे महेन्द्रे वा जपेदयुतमात्मवान् || ६७ ||

सर्वाश्चौषधयस्तस्य खेचरत्वादिसिद्धिदाः | रससिद्धिप्रदाश्चापि सिध्यन्त्यस्य न संशयः | ६८ ||

महेन्द्राद्रिरिव क्षेत्रं सिद्धिदं नास्ति भूतले | जामदग्न्य इवान्योऽस्ति न देवो भृत्यवत्सलः || ६९ ||

प्रस्फुरद्गुणसौवर्णराशीनां जन्मभूः परः | तथेदमिव वर्मान्यद्धर्मादिफलदं न हि || ७० ||

कवचेऽस्मिन्सकृज्जप्ते मन्त्रावृत्तिसहस्त्रजम् | फलमाप्नोत्यविकलं तस्मान्नित्यं जपेन्नरः || ७१ ||

अमन्त्री वापि मन्त्री वा भार्गवे भक्तिमान्नरः | जपेन्नित्यमिदं वर्म मन्त्रसिद्धिमवाप्नुयात् || ७२ ||

सारस्वतमिदं देवि कवचं वाक्प्रदं नृणाम् | मूकोऽपि वाग्मी भवति जपन्नेतद्गुरुर्यथा || ७३ ||

नित्यं परश्वधभृतः कवचस्यास्य धारणात् | सभासु वदतां श्रेष्ठो राज्ञां भवति च प्रियः || ७४ ||

वैदिकं तान्त्रिकं चैव मान्त्रिकं ज्ञानमुत्तमम् | कवचस्यास्य जापी तु ब्रह्मज्ञानं च विन्दति || ७५ ||

इत्येतदुक्तं कवचं मया हैहयविद्विषः | गोपनीयमिदं देवि ममात्मासि मणिर्यथा || ७६ ||

धन्यं यशस्यमायुष्यं श्रीकरं पुष्टिवर्धनम् | जपतां कवचं नित्यं सर्वसौभाग्यपूरितम् || ७७ ||

इति श्रीविष्णुयामले उपरिभागे जामदग्न्यदिव्याञ्जनसिद्धिकल्पे त्रयस्त्रिंशत्पटलः |
श्रीभार्गवार्पणमस्तु ||

|| श्रीभार्गवकवचंसंपूर्णम् ||

पुरुषसूक्त स्वाहाकार

ॐ सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्त्राक्षः सहस्त्रपात् |
स भूमिं विश्वतो वृत्वात्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम् स्वाहा ||१||

ॐ पुरुष एवेदं सर्वं यदभूतं यच्च भव्यम् |
उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति स्वाहा ||२||

ॐ एतावानस्य महिमाऽतो ज्यायांश्च पूरुषः |
पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि स्वाहा ||३||

ॐ त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरुष:पादोऽस्येहाभवत् पुनः |
ततो विष्वङ्व्यक्रामत साशनानशने अभि स्वाहा ||४||

ॐ तस्माव्दिराळजायत विराजो अधि पूरुषः |
स जातो अत्यरिच्यत पश्चाद् भूमिमथो पुर: स्वाहा ||५||

ॐ यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत |
वसन्तो अस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मःशरध्दविः स्वाहा ||६||

ॐ तं यज्ञं बर्हिषि प्रौक्षन् पुरुषं जातमग्रत: |
तेन देवा अयजन्त साध्या ऋषयश्च ये स्वाहा ||७||

ॐ तस्माद् यज्ञात् सर्वहुत: संभृतं पृषदाज्यम् |
पशून् ताँश्चक्रे वायव्यान् आरण्यान् ग्राम्याश्च ये स्वाहा ||८||

ॐ तस्माद् यज्ञात् सर्वहुत ऋचः सामानि जज्ञिरे |
छन्दांसि जज्ञिरे तस्माद् यजुस्तस्मादजायत स्वाहा ||९||

ॐ तस्मादश्वा अजायन्त ये के चोभयादतः |
गावो ह जज्ञिरे तस्मात् तस्माज्जाता अजावयः स्वाहा ||१०||

ॐ यत्पुरुषं व्यदधु: कतिधा व्यकल्पयन् |
मुखं किमस्य कौ बाहू का ऊरु पादा उच्येते स्वाहा ||११||

ॐ ब्राह्मणोस्य मुखमासीद् बाहू राजन्य: कृत: |
ऊरु तदस्य यद्वैश्य: पद् भ्यां शूद्रो अजायत स्वाहा ||१२||

ॐ चन्द्रमा मनसो जातः चक्षो: सूर्यो अजायत |
मुखादिंन्द्रश्चाग्निश्च प्राणाद् वायुरजायत स्वाहा ||१३||

ॐ नाभ्या आसीदन्तरिक्षं शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत |
पद् भ्यां भूमिर्दिश: श्रोत्रात् तथा लोकाँ अकल्पयन् स्वाहा ||१४||

ॐ सप्तास्यासन् परिधयस्त्रि: सप्त समिध: कृता:|
देवा यद् यज्ञं तन्वाना अबध्नन् पुरुषं पशुम् स्वाहा ||१५||

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजंत देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन् |
ते ह नाकं महिमान: सचंत यत्र पूर्वे साध्या: सन्ति देवा: स्वाहा ||१६||

विष्णूसूक्त स्वाहाकार

ॐ अतो देवा अवंतु नो यतो विष्णुर्विचक्रमे ।
पृथिव्याः सप्त धामभिः स्वाहा ।।१।।

ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम् ।
समूळहमस्य पांसुरे स्वाहा ।।२।।

ॐ त्रीणि पदा विचक्रमे विष्णुर्गोपाअदाभ्यः ।
अतो धर्माणि धारयन् स्वाहा ।।३।।

ॐ विष्णोः कर्माणि पश्यत यतो व्रतानि पस्पशे ।
इंद्रस्य युज्यः सखा स्वाहा ।।४।।

ॐ तद्विष्णोः परमं पदं सदा पश्यंति सूरयः ।
दिवीव चक्षुराततम् स्वाहा ।।५।।

ॐ तद्विप्रासो विपन्यवो जागृवांस समिन्धते ।
विष्णोर्यत् परमं पदम् स्वाहा ।।६।।

गणपति अथर्वशीर्ष स्वाहाकार

।। हरि: ॐ ।।

शांति पाठ्

ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवाः | भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः |
स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवांसस्तनूभिः व्यशेम देवहितं यदायुः ||
ॐ स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः | स्वस्ति न पूषा विश्ववेदाः |
स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः | स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु ||
ॐ शान्तिः | शान्तिः | शान्तिः ||

ॐ नमस्ते गणपतये | त्वमेव प्रत्यक्षं तत्त्वमसि | त्वमेव केवलं कर्तासि |
त्वमेव केवलं धर्तासि | त्वमेव केवलं हर्तासि | त्वमेव सर्वं खल्विदं ब्रह्मासि |
त्वं साक्षादात्मासि नित्यम् स्वाहा ||१||

ॐ ऋतं वच्मि | सत्यं वच्मि स्वाहा ||२||

ॐ अवत्वं माम् | अव वक्तारम् | अव श्रोतारम् | अव दातारम् |
अव धातारम् | अवानूचानमव शिष्यम् | अव पश्चात्तात् | अव पुरस्तात् |
अवोत्तरात्तात् | अव दक्षिणात्तात् | अव चोर्ध्वात्तात् | अवाधरात्तात् |
सर्वतो मां पाहि पाहि समन्तात् स्वाहा ||३||

ॐ त्वं वाङ्मयस्त्वं चिन्मय:| त्वमानन्दमयस्त्वं ब्रह्ममय: |
त्वं सच्चिदानन्दाद्वितीयोऽसि | त्वं प्रत्यक्षं ब्रह्मासि |
त्वं ज्ञानमयो विज्ञानमयोऽसि स्वाहा ||४||

ॐ सर्वं जगदिदं त्वत्तो जायते | सर्वं जगदिदं त्वत्तस्तिष्ठति |
सर्वं जगदिदं त्वयि लयमेष्यति | सर्वं जगदिदं त्वयि प्रत्येति |
त्वं भूमिरापोऽनलोऽनिलो नभ: | त्वं चत्वारि वाक्पदानि स्वाहा ||५||

ॐ त्वं गुणत्रयातीतः | त्वं देह त्रयातीतः | त्वं कालत्रयातीतः |
त्वं मूलाधारस्थितोऽसि नित्यम् | त्वं शक्तित्रयात्मकः |
त्वां योगिनो ध्यायन्ति नित्यम् | त्वं ब्रह्मा त्वं विष्णुस्त्वं
रुद्रस्त्वमिंद्रस्त्वमग्निस्त्वं वायुस्त्वं सूर्यस्त्वं चंद्रमास्त्वं ब्रह्मभूर्भुवः स्वरोम् स्वाहा ||६||

ॐ गणादिं पूर्वमुच्चार्य वर्णादिं तदनन्तरम् | अनुस्वारः परतरः | अर्धेन्दुलसितम् |
तारेण ऋद्धम् | एतत्तव मनुस्वरूपम् | गकारः पूर्वरूपम् | अकारो मध्यमरूपम् |
अनुस्वारश्चान्त्यरूपम् | बिन्दुरूत्तररूपम् | नादः संधानम् | सँ हिता सन्धिः |
सैषा गणेशविद्या | गणक ऋषिः | निचृद् गायत्री छन्दः |
गणपतिर्देवता | ॐ गं गणपतये नमः स्वाहा ||७||

ॐ एकदन्ताय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि | तन्नो दन्तीः प्रचोदयात् स्वाहा ||८||

ॐ एकदन्तं चतुर्हस्तं पाशमंकुशधारिणम् | रदं च वरदं हस्तैर्बिभ्राणं मूषकध्वजम् |
रक्तं लम्बोदरं शूर्पकर्णकं रक्तवाससम् | रक्तगन्धानुलिप्ताङ्गं रक्तपुष्पैः सुपूजितम् |
भक्तानुकम्पिनं देवं जगत्कारणमच्युतम् | आविर्भूतं च सृष्ट्यादौ प्रकृतेः पुरुषात्परम् |
एवं ध्यायति यो नित्यं स योगी योगिनां वरः स्वाहा ||९||

ॐ नमो व्रातपतये | नमो गणपतये | नमः प्रमथपतये |
नमस्तेऽस्तु लम्बोदराय एकदंताय विघ्ननाशिने शिवसुताय
वरदमूर्तये नमो नमः स्वाहा ||१०||

फलश्रुति

एतदथर्वशीर्षं योऽधीते | स ब्रह्मभूयाय कल्पते |
स सर्वतः सुखमेधते | स सर्वविघ्नैर्न बाध्यते | स पञ्चमहापापात् प्रमुच्यते ||

सायमधीयानो दिवसकृतं पापं नाशयति | प्रातरधीयानो रात्रिकृतं पापं नाशयति |
सायंप्रातः प्रयुंज्जानो अपापो भवति | सर्वत्राधीयानोऽ पविघ्नो भवति |
धर्मार्थकाममोक्षं च विन्दति ||

इदमथर्वशीर्षमशिष्याय न देयम् | यो यदि मोहाद्दास्यति स पापीयान्भवति |
सहस्रावर्तनात् यं यं काममधीते | तं तमनेन साधयेत् ||

अनेन गणपतिमभिषिंचति स वाग्मी भवति |
चतुर्थ्यामनश्न्जपति स विद्यावान्भवति | इत्यथर्वणवाक्यम् | ब्रह्माद्यावरणं विद्यात् |
न बिभेति कदाचनेति ||

यो दूर्वाङ्कुरैर्यजति स वैश्रवणोपमो भवति | यो लाजैर्यजति स यशोवान्भवति |
स मेधावान्भवति | यो मोदकसहस्रेण यजति | स वांञ्छितफलमवाप्रोति |
यः साज्यसमिद्भिर्यजति | स सर्वं लभते स सर्वं लभते ||

अष्टौ ब्राह्मणान् सम्यग्ग्राहयित्वा सूर्यवर्चस्वी भवति |
सूर्यग्रहे महानद्यां प्रतिमासन्निधौ वा जप्त्वा सिद्ध मन्त्रो भवति |
महाविघ्नात्प्रमुच्यते | महादोषात्प्रमुच्यते | महापापात्प्रमुच्यते |
स सर्वविद्भवति स सर्वविद्भवति | य एवं वेद इत्युपनिषद् ||

शांति पाठ्

ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवाः | भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः |
स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवांसस्तनूभिः व्यशेम देवहितं यदायुः ||
ॐ स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः | स्वस्ति न पूषा विश्ववेदाः |
स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः | स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु ||
ॐ शान्तिः | शान्तिः | शान्तिः ||

|| श्री महा स्वामी याग स्वाहाकार ||

।। हरि: ॐ ।।

१) ॐ श्री स्वामी समर्थाय स्वाहा । श्री श्री स्वामी समर्थाय इदं न मम ।।
२) ॐ भक्त वात्सल्य मूर्तये स्वाहा । श्री भक्त वात्सल्य मूर्तये इदं न मम ।।
३) ॐ दत्तावताराय स्वाहा । श्री दत्तावताराय इदं न मम ।।
४) ॐ गुणत्रय स्वरूपिणे स्वाहा । श्री गुणत्रय स्वरूपिणे इदं न मम ।।
५) ॐ सोमाय स्वाहा । श्री सोमाय इदं न मम ।।
६) ॐ सोऽहं रूपाय स्वाहा । श्री सोऽहं रूपाय इदं न मम ।।
७) ॐ सत्यरूपाय स्वाहा । श्री सत्यरूपाय इदं न मम ।।
८) ॐ साक्षिणे स्वाहा । श्री साक्षिणे इदं न मम ।।
९) ॐ करुणामय रूपाय स्वाहा । श्री करुणामय रूपाय इदं न मम ।।
१०) ॐ मायातीताय स्वाहा । श्री मायातीताय इदं न मम ।।
११) ॐ अमृत स्वरूपाय स्वाहा । श्री अमृत स्वरूपाय इदं न मम ।।
१२) ॐ निर्जराचिन्त्य रूपिणे स्वाहा । श्री निर्जराचिन्त्य रूपिणे इदं न मम ।।
१३) ॐ अखिलामर पूज्याय स्वाहा । श्री अखिलामर पूज्याय इदं न मम ।।
१४) ॐ दयारूपाय स्वाहा । श्री दयारूपाय इदं न मम ।।
१५) ॐ कृपालवे स्वाहा । श्री कृपालवे इदं न मम ।।
१६) ॐ सिंधवे स्वाहा । श्री सिंधवे इदं न मम ।।
१७) ॐ पोताय स्वाहा । श्री पोताय इदं न मम ।।
१८) ॐ धनाय स्वाहा । श्री धनाय इदं न मम ।।
१९) ॐ कृपार्णवाय स्वाहा । श्री कृपार्णवाय इदं न मम ।।
२०) ॐ कृपा दृष्टये स्वाहा । श्री कृपा दृष्टये इदं न मम ।।
२१) ॐ कृपाकराय स्वाहा । श्री कृपाकराय इदं न मम ।।
२२) ॐ दयालवे स्वाहा । श्री दयालवे इदं न मम ।।
२३) ॐ दयावते स्वाहा । श्री दयावते इदं न मम ।।
२४) ॐ दयासिंधवे स्वाहा । श्री दयासिंधवे इदं न मम ।।
२५) ॐ दयार्णवाय स्वाहा । श्री दयार्णवाय इदं न मम ।।
२६) ॐ दयाब्धये स्वाहा । श्री दयाब्धये इदं न मम ।।
२७) ॐ दया दृष्टये स्वाहा । श्री दया दृष्टये इदं न मम ।।
२८) ॐ कराय स्वाहा । श्री कराय इदं न मम ।।
२९) ॐ अभयाय स्वाहा । श्री अभयाय इदं न मम ।।

३०) ॐ निर्भयाय स्वाहा । श्री निर्भयाय इदं न मम ।।
३१) ॐ दक्षाय स्वाहा । श्री दक्षाय इदं न मम ।।
३२) ॐ निर्वाण पददायकाय स्वाहा । श्री निर्वाण पददायकाय इदं न मम ।।
३३) ॐ जगद्भ्रम हराय स्वाहा । श्री जगद्भ्रम हराय इदं न मम ।।
३४) ॐ भवतारकेश्वराय स्वाहा । श्री भवतारकेश्वराय इदं न मम ।।
३५) ॐ अचलाय स्वाहा । श्री अचलाय इदं न मम ।।
३६) ॐ चलरूपाय स्वाहा । श्री चलरूपाय इदं न मम ।।
३७) ॐ चिन्तातीयाय स्वाहा । श्री चिन्तातीयाय इदं न मम ।।
३८) ॐ प्रकाशकाय स्वाहा । श्री प्रकाशकाय इदं न मम ।।
३९) ॐ दीननाथाय स्वाहा । श्री दीननाथाय इदं न मम ।।
४०) ॐ दीनबन्धवे स्वाहा । श्री दीनबन्धवे इदं न मम ।।
४१) ॐ सदयाय स्वाहा । श्री सदयाय इदं न मम ।।
४२) ॐ दीनवत्सलाय स्वाहा । श्री दीनवत्सलाय इदं न मम ।।
४३) ॐ अमृताय स्वाहा । श्री अमृताय इदं न मम ।।
४४) ॐ अविनाशाय स्वाहा । श्री अविनाशाय इदं न मम ।।
४५) ॐ महाभ्रमविनाशिने स्वाहा । श्री महाभ्रमविनाशिने इदं न मम ।।
४६) ॐ अजिताय स्वाहा । श्री अजिताय इदं न मम ।।
४७) ॐ योगलब्धाय स्वाहा । श्री योगलब्धाय इदं न मम ।।
४८) ॐ ज्ञानिने स्वाहा । श्री ज्ञानिने इदं न मम ।।
४९) ॐ अकिंचनाय स्वाहा । श्री अकिंचनाय इदं न मम ।।
५०) ॐ निर्मोहिने स्वाहा । श्री निर्मोहिने इदं न मम ।।
५१) ॐ मोहनाशाय स्वाहा । श्री मोहनाशाय इदं न मम ।।
५२) ॐ जगत्पाश विनाशकाय स्वाहा । श्री जगत्पाश विनाशकाय इदं न मम ।।
५३) ॐ निर्वैराय स्वाहा । श्री निर्वैराय इदं न मम ।।
५४) ॐ भ्रमहीनाय स्वाहा । श्री भ्रमहीनाय इदं न मम ।।
५५) ॐ निर्भ्रमाय स्वाहा । श्री निर्भ्रमाय इदं न मम ।।
५६) ॐ संदेशदाय स्वाहा । श्री संदेशदाय इदं न मम ।।
५७) ॐ स्वदेश स्वदात्रे स्वाहा । श्री स्वदेश स्वदात्रे इदं न मम ।।
५८) ॐ उपाधिहीनाय स्वाहा । श्री उपाधिहीनाय इदं न मम ।।
५९) ॐ भयशोकहंत्रे स्वाहा । श्री भयशोकहंत्रे इदं न मम ।।
६०) ॐ संकष्ट नाशकाय स्वाहा । श्री संकष्ट नाशकाय इदं न मम ।।

६१) ॐ विश्वमूलाय स्वाहा । श्री विश्वमूलाय इदं न मम ।।
६२) ॐ वेदान्तांबुज रूपाय स्वाहा । श्री वेदान्तांबुज रूपाय इदं न मम ।।
६३) ॐ हंसाय स्वाहा । श्री हंसाय इदं न मम ।।
६४) ॐ हंसरूपाय स्वाहा । श्री हंसरूपाय इदं न मम ।।
६५) ॐ हंसपालाय स्वाहा । श्री हंसपालाय इदं न मम ।।
६६) ॐ हंसनाथ स्वरूपाय स्वाहा । श्री हंसनाथ स्वरूपाय इदं न मम ।।
६७) ॐ हंसोद्धारकाय स्वाहा । श्री हंसोद्धारकाय इदं न मम ।।
६८) ॐ हंसिने स्वाहा । श्री हंसिने इदं न मम ।।
६९) ॐ शांतिदाय स्वाहा । श्री शांतिदाय इदं न मम ।।
७०) ॐ शांताय स्वाहा । श्री शांताय इदं न मम ।।
७१) ॐ शश्वच्छांति स्वरूपिणे स्वाहा । श्री शश्वच्छांति स्वरूपिणे इदं न मम ।।
७२) ॐ शांतिकर्त्रे स्वाहा । श्री शांतिकर्त्रे इदं न मम ।।
७३) ॐ शांतिधर्त्रे स्वाहा । श्री शांतिधर्त्रे इदं न मम ।।
७४) ॐ सर्वशांताय स्वाहा । श्री सर्वशांताय इदं न मम ।।
७५) ॐ अहंतानाशक देवाय स्वाहा । श्री अहंतानाशक देवाय इदं न मम ।।
७६) ॐ दंभ दर्प विनाशिने स्वाहा । श्री दंभ दर्प विनाशिने इदं न मम ।।
७७) ॐ क्रोध पारुष्य हन्त्रे स्वाहा । श्री क्रोध पारुष्य हन्त्रे इदं न मम ।।
७८) ॐ अज्ञान निवारकाय स्वाहा । श्री अज्ञान निवारकाय इदं न मम ।।
७९) ॐ परीक्षायै स्वाहा । श्री परीक्षायै इदं न मम ।।
८०) ॐ परिक्ष्याय स्वाहा । श्री परिक्ष्याय इदं न मम ।।
८१) ॐ सुपरिक्षकाय स्वाहा । श्री सुपरिक्षकाय इदं न मम ।।
८२) ॐ परीक्षाविद्वरिष्ठाय स्वाहा । श्री परीक्षाविद्वरिष्ठाय इदं न मम ।।
८३) ॐ परीक्षातीतगाय स्वाहा । श्री परीक्षातीतगाय इदं न मम ।।
८४) ॐ इक्षकाय स्वाहा । श्री इक्षकाय इदं न मम ।।
८५) ॐ पाखंड खण्डनाय स्वाहा । श्री पाखंड खण्डनाय इदं न मम ।।
८६) ॐ ज्ञान स्वरूपाय स्वाहा । श्री ज्ञान स्वरूपाय इदं न मम ।।
८७) ॐ अजरामराय स्वाहा । श्री अजरामराय इदं न मम ।।
८८) ॐ जन्ममृत्यूजरातीताय स्वाहा । श्री जन्ममृत्यूजरातीताय इदं न मम ।।
८९) ॐ स्वतः सिद्धाय स्वाहा । श्री स्वतः सिद्धाय इदं न मम ।।
९०) ॐ देशिकाय स्वाहा । श्री देशिकाय इदं न मम ।।

९१) ॐ निर्णयाय स्वाहा । श्री निर्णयाय इदं न मम ।।
९२) ॐ निर्णयाकाराय स्वाहा । श्री निर्णयाकाराय इदं न मम ।।
९३) ॐ नास्ति सिद्धान्तनाशकाय स्वाहा । श्री नास्ति सिद्धान्तनाशकाय इदं न मम।।
९४) ॐ निराधाराय स्वाहा । श्री निराधाराय इदं न मम ।।
९५) ॐ निराभासाय स्वाहा । श्री निराभासाय इदं न मम ।।
९६) ॐ निर्विघ्नाय स्वाहा । श्री निर्विघ्नाय इदं न मम ।।
९७) ॐ निरामयाय स्वाहा । श्री निरामयाय इदं न मम ।।
९८) ॐ सुखाय स्वाहा । श्री सुखाय इदं न मम ।।
९९) ॐ सुखदात्रे स्वाहा । श्री सुखदात्रे इदं न मम ।।
१००) ॐ सुखदाय स्वाहा । श्री सुखदाय इदं न मम ।।
१०१) ॐ सुखार्णवाय स्वाहा । श्री सुखार्णवाय इदं न मम ।।
१०२) ॐ अस्तिसुखरूपाय स्वाहा । श्री अस्तिसुखरूपाय इदं न मम ।।
१०३) ॐ नास्तिसुखरूपिणे स्वाहा । श्री नास्तिसुखरूपिणे इदं न मम ।।
१०४) ॐ आद्यमूलाय स्वाहा । श्री आद्यमूलाय इदं न मम ।।
१०५) ॐ आदिरूपाय स्वाहा । श्री आदिरूपाय इदं न मम ।।
१०६) ॐ आदिमूर्तये स्वाहा । श्री आदिमूर्तये इदं न मम ।।
१०७) ॐ सनातनाय स्वाहा । श्री सनातनाय इदं न मम ।।
१०८) ॐ अनादिसिद्धाय स्वाहा । श्री अनादिसिद्धाय इदं न मम ।।
१०९) ॐ निराकांक्षाय स्वाहा । श्री निराकांक्षाय इदं न मम ।।
११०) ॐ ध्रुवाय स्वाहा । श्री ध्रुवाय इदं न मम ।।
१११) ॐ अनाद्यनन्ताय स्वाहा । श्री अनाद्यनन्ताय इदं न मम ।।
११२) ॐ अनादिरूपाय स्वाहा । श्री अनादिरूपाय इदं न मम ।।
११३) ॐ अकंपरूपाय स्वाहा । श्री अकंपरूपाय इदं न मम ।।
११४) ॐ प्रमोदरूपाय स्वाहा । श्री प्रमोदरूपाय इदं न मम ।।
११५) ॐ परब्रह्मरूपाय स्वाहा । श्री परब्रह्मरूपाय इदं न मम ।।
११६) ॐ प्रकाशस्वरूपाय स्वाहा । श्री प्रकाशस्वरूपाय इदं न मम ।।
११७) ॐ अधिष्ठानरूपाय स्वाहा । श्री अधिष्ठानरूपाय इदं न मम ।।
११८) ॐ गुणवते स्वाहा । श्री गुणवते इदं न मम ।।
११९) ॐ गुणातीताय स्वाहा । श्री गुणातीताय इदं न मम ।।
१२०) ॐ सर्वातीताय स्वाहा । श्री सर्वातीताय इदं न मम ।।

१२१) ॐ सर्वगाय स्वाहा । श्री सर्वगाय इदं न मम ।।
१२२) ॐ प्रपञ्चभासातीताय स्वाहा । श्री प्रपञ्चभासातीताय इदं न मम ।।
१२३) ॐ भासकातीत रूपिणे स्वाहा । श्री भासकातीत रूपिणे इदं न मम ।।
१२४) ॐ ज्ञानातीताय स्वाहा । श्री ज्ञानातीताय इदं न मम ।।
१२५) ॐ सर्वज्ञाय स्वाहा । श्री सर्वज्ञाय इदं न मम ।।
१२६) ॐ अंधःकार निवारकाय स्वाहा । श्री अंधःकार निवारकाय इदं न मम ।।
१२७) ॐ अतीत साक्षिणे देवाय स्वाहा । श्री अतीत साक्षिणे देवाय इदं न मम ।।
१२८) ॐ बोधातीताय स्वाहा । श्री बोधातीताय इदं न मम ।।
१२९) ॐ बोधकाय स्वाहा । श्री बोधकाय इदं न मम ।।
१३०) ॐ विघ्नविध्वंसकाय स्वाहा । श्री विघ्नविध्वंसकाय इदं न मम ।।
१३१) ॐ दान्ताय स्वाहा । श्री दान्ताय इदं न मम ।।
१३२) ॐ सर्वमंगलदायकाय स्वाहा । श्री सर्वमंगलदायकाय इदं न मम ।।
१३३) ॐ ब्रीदप्रियाय स्वाहा । श्री ब्रीदप्रियाय इदं न मम ।।
१३४) ॐ ब्रीदपालाय स्वाहा । श्री ब्रीदपालाय इदं न मम ।।
१३५) ॐ ब्रीदरक्षाकराय स्वाहा । श्री ब्रीदरक्षाकराय इदं न मम ।।
१३६) ॐ शिष्यपालाय स्वाहा । श्री शिष्यपालाय इदं न मम ।।
१३७) ॐ भक्तपालाय स्वाहा । श्री भक्तपालाय इदं न मम ।।
१३८) ॐ दीनपालाय स्वाहा । श्री दीनपालाय इदं न मम ।।
१३९) ॐ कृपानिधये स्वाहा । श्री कृपानिधये इदं न मम ।।
१४०) ॐ बलवते स्वाहा । श्री बलवते इदं न मम ।।
१४१) ॐ कायानिष्ट निवारकाय स्वाहा । श्री कायानिष्ट निवारकाय इदं न मम ।।
१४२) ॐ निःस्पृहाय स्वाहा । श्री निःस्पृहाय इदं न मम ।।
१४३) ॐ निर्विकाराय स्वाहा । श्री निर्विकाराय इदं न मम ।।
१४४) ॐ निर्द्वंद्वाय स्वाहा । श्री निर्द्वंद्वाय इदं न मम ।।
१४५) ॐ द्वंद्वनाशिने स्वाहा । श्री द्वंद्वनाशिने इदं न मम ।।
१४६) ॐ शिष्यप्रियाय स्वाहा । श्री शिष्यप्रियाय इदं न मम ।।
१४७) ॐ शिष्यवन्दाय स्वाहा । श्री शिष्यवन्दाय इदं न मम ।।
१४८) ॐ प्रियशिष्याय गुरवे स्वाहा । श्री प्रियशिष्याय गुरवे इदं न मम ।।
१४९) ॐ शिष्यवत्सलाय स्वाहा । श्री शिष्यवत्सलाय इदं न मम ।।
१५०) ॐ भवाब्धिपोताय स्वाहा । श्री भवाब्धिपोताय इदं न मम ।।

१५१) ॐ भवरोग वैद्याय स्वाहा । श्री भवरोग वैद्याय इदं न मम ।।
१५२) ॐ भवाटवीपालाय स्वाहा । श्री भवाटवीपालाय इदं न मम ।।
१५३) ॐ अगाध बोधाय स्वाहा । श्री अगाध बोधाय इदं न मम ।।
१५४) ॐ शरण्यत्रात्रे स्वाहा । श्री शरण्यत्रात्रे इदं न मम ।।
१५५) ॐ उदारबुद्धये स्वाहा । श्री उदारबुद्धये इदं न मम ।।
१५६) ॐ समैकदृष्टये स्वाहा । श्री समैकदृष्टये इदं न मम ।।
१५७) ॐ जितमानसाय स्वाहा । श्री जितमानसाय इदं न मम ।।
१५८) ॐ सर्वजीव जीवनाय स्वाहा । श्री सर्वजीव जीवनाय इदं न मम ।।
१५९) ॐ ज्ञानचक्षु भूषणाय स्वाहा । श्री ज्ञानचक्षु भूषणाय इदं न मम ।।
१६०) ॐ भुक्तिमुक्ति प्रदात्रे स्वाहा । श्री भुक्तिमुक्ति प्रदात्रे इदं न मम ।।
१६१) ॐ ज्ञानदाय सद्गुरवे स्वाहा । श्री ज्ञानदाय सद्गुरवे इदं न मम ।।
१६२) ॐ मुक्तिदाय स्वाहा । श्री मुक्तिदाय इदं न मम ।।
१६३) ॐ मुक्तिरूपाय स्वाहा । श्री मुक्तिरूपाय इदं न मम ।।
१६४) ॐ सर्वबंधनमोचनाय स्वाहा । श्री सर्वबंधनमोचनाय इदं न मम ।।
१६५) ॐ विद्याबुद्धि प्रदात्रे स्वाहा । श्री विद्याबुद्धि प्रदात्रे इदं न मम ।।
१६६) ॐ ज्ञान विज्ञान बोधकाय स्वाहा । श्री ज्ञान विज्ञान बोधकाय इदं न मम ।।
१६७) ॐ श्रेष्ठ परी प्रेरकाय स्वाहा । श्री श्रेष्ठ परी प्रेरकाय इदं न मम ।।
१६८) ॐ समाधान प्रदायकाय स्वाहा । श्री समाधान प्रदायकाय इदं न मम ।।
१६९) ॐ प्राप्तिरूपाय स्वाहा । श्री प्राप्तिरूपाय इदं न मम ।।
१७०) ॐ प्राप्तिकाराय स्वाहा । श्री प्राप्तिकाराय इदं न मम ।।
१७१) ॐ भक्तिनाथाय स्वाहा । श्री भक्तिनाथाय इदं न मम ।।
१७२) ॐ सगुणाय स्वाहा । श्री सगुणाय इदं न मम ।।
१७३) ॐ निर्गुणाय स्वाहा । श्री निर्गुणाय इदं न मम ।।
१७४) ॐ प्रसन्नाय स्वाहा । श्री प्रसन्नाय इदं न मम ।।
१७५) ॐ करुणाकराय स्वाहा । श्री करुणाकराय इदं न मम ।।
१७६) ॐ विचाराय स्वाहा । श्री विचाराय इदं न मम ।।
१७७) ॐ परमोदाराय स्वाहा । श्री परमोदाराय इदं न मम ।।
१७८) ॐ सर्वोत्कृष्टाय स्वाहा । श्री सर्वोत्कृष्टाय इदं न मम ।।
१७९) ॐ भवसंहार कर्त्रे स्वाहा । श्री भवसंहार कर्त्रे इदं न मम ।।
१८०) ॐ कामसंहार कारिणे स्वाहा । श्री कामसंहार कारिणे इदं न मम ।।

१८१) ॐ अक्रोधाय स्वाहा । श्री अक्रोधाय इदं न मम ।।
१८२) ॐ क्रोधदमनाय स्वाहा । श्री क्रोधदमनाय इदं न मम ।।
१८३) ॐ निर्मोहाय स्वाहा । श्री निर्मोहाय इदं न मम ।।
१८४) ॐ मोहनाशकाय स्वाहा । श्री मोहनाशकाय इदं न मम ।।
१८५) ॐ निर्लोभाय स्वाहा । श्री निर्लोभाय इदं न मम ।।
१८६) ॐ लोभहन्त्रे स्वाहा । श्री लोभहन्त्रे इदं न मम ।।
१८७) ॐ अजेयाय स्वाहा । श्री अजेयाय इदं न मम ।।
१८८) ॐ जितेंद्राय स्वाहा । श्री जितेंद्राय इदं न मम ।।
१८९) ॐ अवश्याय स्वाहा । श्री अवश्याय इदं न मम ।।
१९०) ॐ सर्ववश्याय स्वाहा । श्री सर्ववश्याय इदं न मम ।।
१९१) ॐ सर्वमान्याय स्वाहा । श्री सर्वमान्याय इदं न मम ।।
१९२) ॐ मानदाय स्वाहा । श्री मानदाय इदं न मम ।।
१९३) ॐ मन्त्रमूलाय स्वाहा । श्री मन्त्रमूलाय इदं न मम ।।
१९४) ॐ सर्वपूज्याय स्वाहा । श्री सर्वपूज्याय इदं न मम ।।
१९५) ॐ ध्यानमूलाय स्वाहा । श्री ध्यानमूलाय इदं न मम ।।
१९६) ॐ जगतप्रियाय स्वाहा । श्री जगतप्रियाय इदं न मम ।।
१९७) ॐ हंसप्रियाय स्वाहा । श्री हंसप्रियाय इदं न मम ।।
१९८) ॐ हंसमूलाय स्वाहा । श्री हंसमूलाय इदं न मम ।।
१९९) ॐ ज्ञान विज्ञान मूलकाय स्वाहा । श्री ज्ञान विज्ञान मूलकाय इदं न मम ।।
२००) ॐ अखिल ज्ञान रूपाय स्वाहा । श्री अखिल ज्ञान रूपाय इदं न मम ।।
२०१) ॐ अखिलानंद मूर्तये स्वाहा । श्री अखिलानंद मूर्तये इदं न मम ।।
२०२) ॐ अखिलाज्ञान नाशाय स्वाहा । श्री अखिलाज्ञान नाशाय इदं न मम ।।
२०३) ॐ स्नेहरूपाय स्वाहा । श्री स्नेहरूपाय इदं न मम ।।
२०४) ॐ घोराय स्वाहा । श्री घोराय इदं न मम ।।
२०५) ॐ निरंजनाय स्वाहा । श्री निरंजनाय इदं न मम ।।
२०६) ॐ पूर्णाय स्वाहा । श्री पूर्णाय इदं न मम ।।
२०७) ॐ द्विभुजाय स्वाहा । श्री द्विभुजाय इदं न मम ।।
२०८) ॐ तापहारिणे स्वाहा । श्री तापहारिणे इदं न मम ।।
२०९) ॐ कर्मपाशविमोकत्रे स्वाहा । श्री कर्मपाशविमोकत्रे इदं न मम ।।
२१०) ॐ निर्भराय स्वाहा । श्री निर्भराय इदं न मम ।।

२११) ॐ शीतलाश्रयाय स्वाहा । श्री शीतलाश्रयाय इदं न मम ।।
२१२) ॐ अयोनि संभवाय स्वाहा । श्री अयोनि संभवाय इदं न मम ।।
२१३) ॐ कृपाकटाक्ष प्रेरकाय स्वाहा । श्री कृपाकटाक्ष प्रेरकाय इदं न मम ।।
२१४) ॐ अकामरूप धारिणे स्वाहा । श्री अकामरूप धारिणे इदं न मम ।।
२१५) ॐ सुवीर्यशक्ति रक्षकाय स्वाहा । श्री सुवीर्यशक्ति रक्षकाय इदं न मम ।।
२१६) ॐ अपापतापवर्धकाय स्वाहा । श्री अपापतापवर्धकाय इदं न मम ।।
२१७) ॐ अनामयप्रदप्रभवे स्वाहा । श्री अनामयप्रदप्रभवे इदं न मम ।।
२१८) ॐ अजाय स्वाहा । श्री अजाय इदं न मम ।।
२१९) ॐ जरानिवारकाय स्वाहा । श्री जरानिवारकाय इदं न मम ।।
२२०) ॐ अरूपाय स्वाहा । श्री अरूपाय इदं न मम ।।
२२१) ॐ अक्षराय स्वाहा । श्री अक्षराय इदं न मम ।।
२२२) ॐ भृंगिणे स्वाहा । श्री भृंगिणे इदं न मम।।
२२३) ॐ अभयदात्रे स्वाहा । श्री अभयदात्रे इदं न मम ।।
२२४) ॐ सुखोदधये स्वाहा । श्री सुखोदधये इदं न मम ।।
२२५) ॐ अपारदाय स्वाहा । श्री अपारदाय इदं न मम ।।
२२६) ॐ धनेश्वराय स्वाहा । श्री धनेश्वराय इदं न मम ।।
२२७) ॐ स्फूर्तिदाय स्वाहा । श्री स्फूर्तिदाय इदं न मम ।।
२२८) ॐ परमात्मने स्वाहा । श्री परमात्मने इदं न मम ।।
२२९) ॐ अव्ययाय स्वाहा । श्री अव्ययाय इदं न मम ।।
२३०) ॐ अमलाय स्वाहा । श्री अमलाय इदं न मम ।।
२३१) ॐ निर्मलाय स्वाहा । श्री निर्मलाय इदं न मम ।।
२३२) ॐ गुह्याय स्वाहा । श्री गुह्याय इदं न मम ।।
२३३) ॐ हंसज्ञाय स्वाहा । श्री हंसज्ञाय इदं न मम ।।
२३४) ॐ हंसनायकाय स्वाहा । श्री हंसनायकाय इदं न मम ।।
२३५) ॐ भक्ताभयकराय स्वाहा । श्री भक्ताभयकराय इदं न मम ।।
२३६) ॐ साराय स्वाहा । श्री साराय इदं न मम ।।
२३७) ॐ अक्षय्यसुखदायकाय स्वाहा । श्री अक्षय्यसुखदायकाय इदं न मम ।।
२३८) ॐ सत्यवाक्याय स्वाहा । श्री सत्यवाक्याय इदं न मम ।।
२३९) ॐ प्रकाशाय स्वाहा । श्री प्रकाशाय इदं न मम ।।
२४०) ॐ परमाद्भूत क्रीड़नाय स्वाहा । श्री परमाद्भूत क्रीड़नाय इदं न मम ।।

२४१) ॐ अनर्हकमलाय स्वाहा । श्री अनर्हकमलाय इदं न मम ।।
२४२) ॐ धीराय स्वाहा । श्री धीराय इदं न मम ।।
२४३) ॐ सर्वकामप्रदाय स्वाहा । श्री सर्वकामप्रदाय इदं न मम ।।
२४४) ॐ सन्तोषाय स्वाहा । श्री सन्तोषाय इदं न मम ।।
२४५) ॐ शक्तिसंपन्नाय स्वाहा । श्री शक्तिसंपन्नाय इदं न मम ।।
२४६) ॐ कविराभिधधमाय साधवे स्वाहा । श्री कविराभिधधमाय साधवे इदं न मम ।।
२४७) ॐ कविनाम्ने हंसाय स्वाहा । श्री कविनाम्ने हंसाय इदं न मम ।।
२४८) ॐ सज्जनप्राण वल्लभाय स्वाहा । श्री सज्जनप्राण वल्लभाय इदं न मम ।।
२४९) ॐ कृतज्ञाय स्वाहा । श्री कृतज्ञाय इदं न मम ।।
२५०) ॐ परमवैद्या स्वाहा । श्री परमवैद्या इदं न मम ।।
२५१) ॐ परमलक्ष्या स्वाहा । श्री परमलक्ष्या इदं न मम ।।
२५२) ॐ परमलक्ष्याय स्वाहा । श्री परमलक्ष्याय इदं न मम ।।
२५३) ॐ अकत्रे स्वाहा । श्री अकत्रे इदं न मम ।।
२५४) ॐ कविरनाम्ने सिद्धाय स्वाहा । श्री कविरनाम्ने सिद्धाय इदं न मम ।।
२५५) ॐ निरालम्बाय स्वाहा । श्री निरालम्बाय इदं न मम ।।
२५६) ॐ सुरद्रुमाय स्वाहा । श्री सुरद्रुमाय इदं न मम ।।
२५७) ॐ करुणारूपाय स्वाहा । श्री करुणारूपाय इदं न मम ।।
२५८) ॐ योगिने स्वाहा । श्री योगिने इदं न मम ।।
२५९) ॐ दिव्यरूपाय स्वाहा । श्री दिव्यरूपाय इदं न मम ।।
२६०) ॐ अनामयाय स्वाहा । श्री अनामयाय इदं न मम ।।
२६१) ॐ छायातीताय स्वाहा । श्री छायातीताय इदं न मम ।।
२६२) ॐ अविज्ञाताय स्वाहा । श्री अविज्ञाताय इदं न मम ।।
२६३) ॐ कायातीताय स्वाहा । श्री कायातीताय इदं न मम ।।
२६४) ॐ कालमर्दनाय स्वाहा । श्री कालमर्दनाय इदं न मम ।।
२६५) ॐ कीर्तिवर्धनाय स्वाहा । श्री कीर्तिवर्धनाय इदं न मम ।।
२६६) ॐ ब्रीदरक्षकाय स्वाहा । श्री ब्रीदरक्षकाय इदं न मम ।।
२६७) ॐ ध्वान्तभक्षकाय स्वाहा । श्री ध्वान्तभक्षकाय इदं न मम ।।
२६८) ॐ ज्ञानसागराय स्वाहा । श्री ज्ञानसागराय इदं न मम ।।
२६९) ॐ पुण्यवर्धकाय स्वाहा । श्री पुण्यवर्धकाय इदं न मम ।।
२७०) ॐ सौख्यसागराय स्वाहा । श्री सौख्यसागराय इदं न मम ।।

२७१) ॐ सर्वदायकाय स्वाहा । श्री सर्वदायकाय इदं न मम ।।
२७२) ॐ वाच्यवाचकरूपाय स्वाहा । श्री वाच्यवाचकरूपाय इदं न मम ।।
२७३) ॐ अनिर्वाच्य स्वरूपिणे स्वाहा । श्री अनिर्वाच्य स्वरूपिणे इदं न मम ।।
२७४) ॐ छंदोतीताय स्वाहा । श्री छंदोतीताय इदं न मम ।।
२७५) ॐ शास्त्रातीताय स्वाहा । श्री शास्त्रातीताय इदं न मम ।।
२७६) ॐ देवाय स्वाहा । श्री देवाय इदं न मम ।।
२७७) ॐ नररूपाय स्वाहा । श्री नररूपाय इदं न मम ।।
२७८) ॐ निराकाराय स्वाहा । श्री निराकाराय इदं न मम।।
२७९) ॐ नृसिंहाय स्वाहा । श्री नृसिंहाय इदं न मम ।।
२८०) ॐ नरनायकाय स्वाहा । श्री नरनायकाय इदं न मम ।।
२८१) ॐ यक्षराक्षस गंधर्व रूपातीत नराय स्वाहा ।
श्री यक्षराक्षस गंधर्व रूपातीत नराय इदं न मम ।।
२८२) ॐ दैत्यातीताय स्वाहा । श्री दैत्यातीताय इदं न मम ।।
२८३) ॐ त्रिकालज्ञाय स्वाहा । श्री त्रिकालज्ञाय इदं न मम ।।
२८४) ॐ देवातीताय स्वाहा । श्री देवातीताय इदं न मम ।।
२८५) ॐ भास्वराय स्वाहा । श्री भास्वराय इदं न मम ।।
२८६) ॐ त्रिकालाय स्वाहा । श्री त्रिकालाय इदं न मम ।।
२८७) ॐ त्रिदेवाय स्वाहा । श्री त्रिदेवाय इदं न मम ।।
२८८) ॐ कालातीताय स्वाहा । श्री कालातीताय इदं न मम ।।
२८९) ॐ कलाय स्वाहा । श्री कलाय इदं न मम ।।
२९०) ॐ पञ्चब्रह्मातिरूपाय स्वाहा । श्री पञ्चब्रह्मातिरूपाय इदं न मम ।।
२९१) ॐ पञ्चमात्राविवर्जिताय स्वाहा । श्री पञ्चमात्राविवर्जिताय इदं न मम ।।
२९२) ॐ दशमात्राविनिर्मुक्ताय स्वाहा । श्री दशमात्राविनिर्मुक्ताय इदं न मम ।।
२९३) ॐ पञ्चस्थान गताय स्वाहा । श्री पञ्चस्थान गताय इदं न मम ।।
२९४) ॐ अतीतपञ्च अविद्याय स्वाहा । श्री अतीतपञ्च अविद्याय इदं न मम ।।
२९५) ॐ पञ्च देहातिशाय गुरवे स्वाहा । श्री पञ्च देहातिशाय गुरवे इदं न मम ।।
२९६) ॐ अतीत पञ्चतत्त्वाय स्वाहा । श्री अतीत पञ्चतत्त्वाय इदं न मम ।।
२९७) ॐ पञ्चविषय पन्नगाय स्वाहा । श्री पञ्चविषय पन्नगाय इदं न मम ।।
२९८) ॐ चतुर्दशकलातीताय स्वाहा । श्री चतुर्दशकलातीताय इदं न मम।।
२९९) ॐ षड्भावविनिवर्तिताय स्वाहा । श्री षड्भावविनिवर्तिताय इदं न मम ।।
३००) ॐ षड्विकार विहीनाय स्वाहा । श्री षड्विकार विहीनाय इदं न मम ।।

३०१) ॐ योगातीताय स्वाहा । श्री योगातीताय इदं न मम ।।
३०२) ॐ जगद्गुरवे स्वाहा । श्री जगद्गुरवे इदं न मम ।।
३०३) ॐ रागातीताय स्वाहा । श्री रागातीताय इदं न मम ।।
३०४) ॐ विरागाय स्वाहा । श्री विरागाय इदं न मम ।।
३०५) ॐ योगायोग विवर्जिताय स्वाहा । श्री योगायोग विवर्जिताय इदं न मम ।।
३०६) ॐ संयोग वियोग हीनाय स्वाहा । श्री संयोग वियोग हीनाय इदं न मम ।।
३०७) ॐ भोग्यभोगातिरूपिणे स्वाहा । श्री भोग्यभोगातिरूपिणे इदं न मम ।।
३०८) ॐ विवेकाय स्वाहा । श्री विवेकाय इदं न मम ।।
३०९) ॐ विवेकातीताय स्वाहा । श्री विवेकातीताय इदं न मम ।।
३१०) ॐ विवेकित्वाय स्वाहा । श्री विवेकित्वाय इदं न मम ।।
३११) ॐ विवेकिने स्वाहा । श्री विवेकिने इदं न मम ।।
३१२) ॐ विवेकरूपाय स्वाहा । श्री विवेकरूपाय इदं न मम ।।
३१३) ॐ अविवेकनिवर्तकाय स्वाहा । श्री अविवेकनिवर्तकाय इदं न मम ।।
३१४) ॐ संवित्प्रकाशरूपाय स्वाहा । श्री संवित्प्रकाशरूपाय इदं न मम ।।
३१५) ॐ स्थिराय स्वाहा । श्री स्थिराय इदं न मम ।।
३१६) ॐ स्थितिदायिने स्वाहा । श्री स्थितिदायिने इदं न मम ।।
३१७) ॐ मिथ्याभास विनाशाय स्वाहा । श्री मिथ्याभास विनाशाय इदं न मम ।।
३१८) ॐ निःसंदेहाय स्वाहा । श्री निःसंदेहाय इदं न मम ।।
३१९) ॐ गर्भवासनिहन्त्रे स्वाहा । श्री गर्भवासनिहन्त्रे इदं न मम ।।
३२०) ॐ अहंतानाशनाय स्वाहा । श्री अहंतानाशनाय इदं न मम ।।
३२१) ॐ निभवे स्वाहा । श्री निभवे इदं न मम ।।
३२२) ॐ समदृष्टये स्वाहा । श्री समदृष्टये इदं न मम ।।
३२३) ॐ सर्वमित्राय स्वाहा । श्री सर्वमित्राय इदं न मम ।।
३२४) ॐ सर्वतो भयकारिणे स्वाहा । श्री सर्वतो भयकारिणे इदं न मम ।।
३२५) ॐ जितात्मने स्वाहा । श्री जितात्मने इदं न मम।।
३२६) ॐ लोकनाथाय स्वाहा । श्री लोकनाथाय इदं न मम।।
३२७) ॐ भयहन्त्रे स्वाहा । श्री भयहन्त्रे इदं न मम ।।
३२८) ॐ प्रतापवते स्वाहा । श्री प्रतापवते इदं न मम ।।
३२९) ॐ अनित्यभंजनवीराय स्वाहा । श्री अनित्यभंजनवीराय इदं न मम ।।
३३०) ॐ सदानित्यस्वरूपवते स्वाहा । श्री सदानित्यस्वरूपवते इदं न मम ।।

३३१) ॐ शशिसूर्य विभासाय स्वाहा । श्री शशिसूर्य विभासाय इदं न मम ।।
३३२) ॐ सर्वानुग्रकारकाय स्वाहा । श्री सर्वानुग्रकारकाय इदं न मम ।।
३३३) ॐ भवबंधखंगाय स्वाहा । श्री भवबंधखंगाय इदं न मम ।।
३३४) ॐ भवपाश विनाशकाय स्वाहा । श्री भवपाश विनाशकाय इदं न मम ।।
३३५) ॐ विरागजाताय स्वाहा । श्री विरागजाताय इदं न मम ।।
३३६) ॐ गुरुभक्तिसुताय स्वाहा । श्री गुरुभक्तिसुताय इदं न मम ।।
३३७) ॐ दयासत्यशील प्रदाय स्वाहा । श्री दयासत्यशील प्रदाय इदं न मम ।।
३३८) ॐ धैर्ययुक्ताय स्वाहा । श्री धैर्ययुक्ताय इदं न मम ।।
३३९) ॐ कैवल्यदाय स्वाहा । श्री कैवल्यदाय इदं न मम ।।
३४०) ॐ सुविचारमूलाय स्वाहा । श्री सुविचारमूलाय इदं न मम ।।
३४१) ॐ निर्णयरूपिणे गुरवे स्वाहा । श्री निर्णयरूपिणे गुरवे इदं न मम ।।
३४२) ॐ दासावनाय स्वाहा । श्री दासावनाय इदं न मम ।।
३४३) ॐ दासपालाय स्वाहा । श्री दासपालाय इदं न मम ।।
३४४) ॐ दासरक्षाकराय स्वाहा । श्री दासरक्षाकराय इदं न मम ।।
३४५) ॐ पतये स्वाहा । श्री पतये इदं न मम ।।
३४६) ॐ व्याधिहंत्रे स्वाहा । श्री व्याधिहंत्रे इदं न मम ।।
३४७) ॐ रोगनाशाय स्वाहा । श्री रोगनाशाय इदं न मम ।।
३४८) ॐ दुखःभंजनकारकाय स्वाहा । श्री दुखःभंजनकारकाय इदं न मम ।।
३४९) ॐ दयानिधये स्वाहा । श्री दयानिधये इदं न मम ।।
३५०) ॐ महात्मने स्वाहा । श्री महात्मने इदं न मम ।।
३५१) ॐ ज्ञानांजन प्रदाय स्वाहा । श्री ज्ञानांजन प्रदाय इदं न मम ।।
३५२) ॐ दुष्ट भन्जनाय स्वाहा । श्री दुष्ट भन्जनाय इदं न मम ।।
३५३) ॐ ईशानाय स्वाहा । श्री ईशानाय इदं न मम ।।
३५४) ॐ भ्रमपात निवर्तकाय स्वाहा । श्री भ्रमपात निवर्तकाय इदं न मम ।।
३५५) ॐ पवित्राय स्वाहा । श्री पवित्राय इदं न मम ।।
३५६) ॐ पावनाय स्वाहा । श्री पावनाय इदं न मम ।।
३५७) ॐ अनंताय स्वाहा । श्री अनंताय इदं न मम ।।
३५८) ॐ सर्वारिष्ट निवारकाय स्वाहा । श्री सर्वारिष्ट निवारकाय इदं न मम ।।
३५९) ॐ भवाब्धिनौकानेत्रे स्वाहा । श्री भवाब्धिनौकानेत्रे इदं न मम ।।
३६०) ॐ कृतान्त भयहारकाय स्वाहा । श्री कृतान्त भयहारकाय इदं न मम।।

३६१) ॐ अपमृत्युभयत्रात्रे स्वाहा । श्री अपमृत्युभयत्रात्रे इदं न मम ।।
३६२) ॐ भूतादिभय नाशकाय स्वाहा । श्री भूतादिभय नाशकाय इदं न मम ।।
३६३) ॐ चोरादिभयहंत्रे स्वाहा । श्री चोरादिभयहंत्रे इदं न मम ।।
३६४) ॐ नृपादिभय वारकाय स्वाहा । श्री नृपादिभय वारकाय इदं न मम ।।
३६५) ॐ आधिव्याधि भयत्रात्रे स्वाहा । श्री आधिव्याधि भयत्रात्रे इदं न मम ।।
३६६) ॐ सर्वत्राभयदायकाय स्वाहा । श्री सर्वत्राभयदायकाय इदं न मम ।।
३६७) ॐ महते स्वाहा । श्री महते इदं न मम ।।
३६८) ॐ संसारभय हर्त्रे स्वाहा । श्री संसारभय हर्त्रे इदं न मम ।।
३६९) ॐ मायाभयनिवारकाय स्वाहा । श्री मायाभयनिवारकाय इदं न मम ।।
३७०) ॐ अलक्ष्याय स्वाहा । श्री अलक्ष्याय इदं न मम ।।
३७१) ॐ लक्ष्यरूपाय स्वाहा । श्री लक्ष्यरूपाय इदं न मम ।।
३७२) ॐ क्षयाक्षय स्वरूपवते स्वाहा । श्री क्षयाक्षय स्वरूपवते इदं न मम ।।
३७३) ॐ भूतिमते स्वाहा । श्री भूतिमते इदं न मम ।।
३७४) ॐ भूतिदात्रे स्वाहा । श्री भूतिदात्रे इदं न मम ।।
३७५) ॐ सर्वसिद्धान्त दर्शकाय स्वाहा । श्री सर्वसिद्धान्त दर्शकाय इदं न मम ।।
३७६) ॐ अनघाय स्वाहा । श्री अनघाय इदं न मम ।।
३७७) ॐ दीक्षारूपाय स्वाहा । श्री दीक्षारूपाय इदं न मम ।।
३७८) ॐ सर्वभूतप्रियंकराय स्वाहा । श्री सर्वभूतप्रियंकराय इदं न मम ।।
३७९) ॐ पक्षापक्ष स्वरूपाय स्वाहा । श्री पक्षापक्ष स्वरूपाय इदं न मम ।।
३८०) ॐ सत सिद्धि पथ दर्शकाय स्वाहा । श्री सत सिद्धि पथ दर्शकाय इदं न मम ।।
३८१) ॐ महत्स जातिभावाय स्वाहा । श्री महत्स जातिभावाय इदं न मम ।।
३८२) ॐ दात्रे स्वाहा । श्री दात्रे इदं न मम ।।
३८३) ॐ भोक्त्रे स्वाहा । श्री भोक्त्रे इदं न मम ।।
३८४) ॐ गुरुत्तमाय स्वाहा । श्री गुरुत्तमाय इदं न मम ।।
३८५) ॐ सर्व सामर्थ्य संपन्नाय स्वाहा । श्री सर्व सामर्थ्य संपन्नाय इदं न मम ।।
३८६) ॐ वैभवाय स्वाहा । श्री वैभवाय इदं न मम ।।
३८७) ॐ अमित वैभवाय स्वाहा । श्री अमित वैभवाय इदं न मम ।।
३८८) ॐ अद्वितीयाय स्वाहा । श्री अद्वितीयाय इदं न मम ।।
३८९) ॐ अक्षयाय स्वाहा । श्री अक्षयाय इदं न मम ।।
३९०) ॐ अनादये स्वाहा । श्री अनादये इदं न मम ।।

३९१) ॐ सर्वज्ञान शिरोमणये स्वाहा । श्री सर्वज्ञान शिरोमणये इदं न मम ।।
३९२) ॐ साधुगुरवे स्वाहा । श्री साधुगुरवे इदं न मम ।।
३९३) ॐ सज्जन गुरवे स्वाहा । श्री सज्जन गुरवे इदं न मम ।।
३९४) ॐ पतितोद्धारकाय स्वाहा । श्री पतितोद्धारकाय इदं न मम ।।
३९५) ॐ कृतिने स्वाहा । श्री कृतिने इदं न मम ।।
३९६) ॐ प्रबोधकर्त्रे स्वाहा । श्री प्रबोधकर्त्रे इदं न मम ।।
३९७) ॐ त्रितापहर्त्रे स्वाहा । श्री त्रितापहर्त्रे इदं न मम ।।
३९८) ॐ सद्बोध दात्रे स्वाहा । श्री सद्बोध दात्रे इदं न मम ।।
३९९) ॐ सुविचारवते सुधिये स्वाहा । श्री सुविचारवते सुधिये इदं न मम ।।
४००) ॐ आनंदरूपाय स्वाहा । श्री आनंदरूपाय इदं न मम ।।
४०१) ॐ सुधैर्यवते स्वाहा । श्री सुधैर्यवते इदं न मम ।।
४०२) ॐ उद्धारकर्त्रे स्वाहा । श्री उद्धारकर्त्रे इदं न मम ।।
४०३) ॐ जगदुद्धार दक्षाय स्वाहा । श्री जगदुद्धार दक्षाय इदं न मम ।।
४०४) ॐ शरणागत रक्षकाय स्वाहा । श्री शरणागत रक्षकाय इदं न मम ।।
४०५) ॐ दैत्य विध्वंसकाय स्वाहा । श्री दैत्य विध्वंसकाय इदं न मम ।।
४०६) ॐ नेत्रे स्वाहा । श्री नेत्रे इदं न मम ।।
४०७) ॐ कल्पनाखंजनाय स्वाहा । श्री कल्पनाखंजनाय इदं न मम ।।
४०८) ॐ क्रमाय स्वाहा । श्री क्रमाय इदं न मम ।।
४०९) ॐ सर्वेश्वराय स्वाहा । श्री सर्वेश्वराय इदं न मम।।
४१०) ॐ दयाधाराय स्वाहा । श्री दयाधाराय इदं न मम ।।
४११) ॐ ज्ञानविज्ञान कारकाय स्वाहा । श्री ज्ञानविज्ञान कारकाय इदं न मम ।।
४१२) ॐ सारज्ञाय स्वाहा । श्री सारज्ञाय इदं न मम ।।
४१३) ॐ सर्वंविद्वेत्रे स्वाहा । श्री सर्वंविद्वेत्रे इदं न मम ।।
४१४) ॐ सारविद्सुजनाय स्वाहा । श्री सारविद्सुजनाय इदं न मम ।।
४१५) ॐ सखिने स्वाहा । श्री सखिने इदं न मम ।।
४१६) ॐ इक्षावते स्वाहा । श्री इक्षावते इदं न मम ।।
४१७) ॐ सुजनाधाराय स्वाहा । श्री सुजनाधाराय इदं न मम ।।
४१८) ॐ अपाराय स्वाहा । श्री अपाराय इदं न मम ।।
४१९) ॐ अपरप्रियाय स्वाहा । श्री अपरप्रियाय इदं न मम ।।
४२०) ॐ ज्ञानवते स्वाहा । श्री ज्ञानवते इदं न मम ।।

४२१) ॐ भुवनाधाराय स्वाहा । श्री भुवनाधाराय इदं न मम ।।
४२२) ॐ सत्सुहृदाय स्वाहा । श्री सत्सुहृदाय इदं न मम ।।
४२३) ॐ सुजनप्रियाय स्वाहा । श्री सुजनप्रियाय इदं न मम ।।
४२४) ॐ मुक्ताय स्वाहा । श्री मुक्ताय इदं न मम ।।
४२५) ॐ मुक्तिदाय स्वाहा । श्री मुक्तिदाय इदं न मम ।।
४२६) ॐ अमायाय स्वाहा । श्री अमायाय इदं न मम ।।
४२७) ॐ मायासंयुक्ताय स्वाहा । श्री मायासंयुक्ताय इदं न मम ।।
४२८) ॐ मायिने स्वाहा । श्री मायिने इदं न मम ।।
४२९) ॐ मायानिवर्तकाय स्वाहा । श्री मायानिवर्तकाय इदं न मम ।।
४३०) ॐ बन्धमोक्षाय स्वाहा । श्री बन्धमोक्षाय इदं न मम ।।
४३१) ॐ अज्ञान निवर्तकाय स्वाहा । श्री अज्ञान निवर्तकाय इदं न मम ।।
४३२) ॐ अकायाय स्वाहा । श्री अकायाय इदं न मम ।।
४३३) ॐ कायावते स्वाहा । श्री कायावते इदं न मम ।।
४३४) ॐ ग्राह्याय स्वाहा । श्री ग्राह्याय इदं न मम ।।
४३५) ॐ अग्राह्याय स्वाहा । श्री अग्राह्याय इदं न मम ।।
४३६) ॐ संधिविवर्जिताय स्वाहा । श्री संधिविवर्जिताय इदं न मम ।।
४३७) ॐ सुखाब्धये स्वाहा । श्री सुखाब्धये इदं न मम ।।
४३८) ॐ कृपाब्धये स्वाहा । श्री कृपाब्धये इदं न मम ।।
४३९) ॐ रूपाब्धये स्वाहा । श्री रूपाब्धये इदं न मम ।।
४४०) ॐ गुणसागराय स्वाहा । श्री गुणसागराय इदं न मम ।।
४४१) ॐ विशालाय स्वाहा । श्री विशालाय इदं न मम ।।
४४२) ॐ विगताय स्वाहा । श्री विगताय इदं न मम ।।
४४३) ॐ अभेदागम लक्षणाय स्वाहा । श्री अभेदागम लक्षणाय इदं न मम ।।
४४४) ॐ अखण्डाय स्वाहा । श्री अखण्डाय इदं न मम ।।
४४५) ॐ अपरोक्षाय स्वाहा । श्री अपरोक्षाय इदं न मम ।।
४४६) ॐ पुराणपुरुषोत्तमाय स्वाहा । श्री पुराणपुरुषोत्तमाय इदं न मम ।।
४४७) ॐ अजानुबाहवे स्वाहा । श्री अजानुबाहवे इदं न मम ।।
४४८) ॐ आनंदाय स्वाहा । श्री आनंदाय इदं न मम ।।
४४९) ॐ सत्याय स्वाहा । श्री सत्याय इदं न मम ।।
४५०) ॐ संतोषसारवते स्वाहा । श्री संतोषसारवते इदं न मम ।।

४५१) ॐ साधूनांपतये स्वाहा । श्री साधूनांपतये इदं न मम ।।
४५२) ॐ ईशाय स्वाहा । श्री ईशाय इदं न मम ।।
४५३) ॐ सुजनरक्षकाय स्वाहा । श्री सुजनरक्षकाय इदं न मम ।।
४५४) ॐ पात्रे स्वाहा । श्री पात्रे इदं न मम ।।
४५५) ॐ साधुसुहृदे स्वाहा । श्री साधुसुहृदे इदं न मम ।।
४५६) ॐ भक्तसुहृदे स्वाहा । श्री भक्तसुहृदे इदं न मम ।।
४५७) ॐ सर्वलोक सुहृत्सखिने स्वाहा । श्री सर्वलोक सुहृत्सखिने इदं न मम ।।
४५८) ॐ भक्तिप्रियाय स्वाहा । श्री भक्तिप्रियाय इदं न मम ।।
४५९) ॐ सत्प्रियाय स्वाहा । श्री सत्प्रियाय इदं न मम ।।
४६०) ॐ स्नेहसागराय स्वाहा । श्री स्नेहसागराय इदं न मम ।।
४६१) ॐ स्नेहमूर्तये स्वाहा । श्री स्नेहमूर्तये इदं न मम ।।
४६२) ॐ स्नेहीने स्वाहा । श्री स्नेहीने इदं न मम ।।
४६३) ॐ प्रेममूर्तये स्वाहा । श्री प्रेममूर्तये इदं न मम ।।
४६४) ॐ प्रेमलाय स्वाहा । श्री प्रेमलाय इदं न मम ।।
४६५) ॐ परमस्नेहपूर्णाय स्वाहा । श्री परमस्नेहपूर्णाय इदं न मम ।।
४६६) ॐ स्थिरभक्तये स्वाहा । श्री स्थिरभक्तये इदं न मम ।।
४६७) ॐ भक्तवत्सलाय स्वाहा । श्री भक्तवत्सलाय इदं न मम ।।
४६८) ॐ हीरकाय स्वाहा । श्री हीरकाय इदं न मम ।।
४६९) ॐ मरकताय स्वाहा । श्री मरकताय इदं न मम ।।
४७०) ॐ सत्यलोकपतये स्वाहा । श्री सत्यलोकपतये इदं न मम ।।
४७१) ॐ नीलाय स्वाहा । श्री नीलाय इदं न मम ।।
४७२) ॐ अक्षय्याश्वत्थ रूपिणे स्वाहा । श्री अक्षय्याश्वत्थ रूपिणे इदं न मम ।।
४७३) ॐ पुष्पद्विप निवासिने स्वाहा । श्री पुष्पद्विप निवासिने इदं न मम ।।
४७४) ॐ श्यामाय स्वाहा । श्री श्यामाय इदं न मम ।।
४७५) ॐ अशोष्याय स्वाहा । श्री अशोष्याय इदं न मम ।।
४७६) ॐ नादहीनाय स्वाहा । श्री नादहीनाय इदं न मम ।।
४७७) ॐ जलरूपाय स्वाहा । श्री जलरूपाय इदं न मम ।।
४७८) ॐ जलाश्रयाय स्वाहा । श्री जलाश्रयाय इदं न मम ।।
४७९) ॐ अश्रोत्राय स्वाहा । श्री अश्रोत्राय इदं न मम ।।
४८०) ॐ चक्षुहिनाय स्वाहा । श्री चक्षुहिनाय इदं न मम ।।

४८१) ॐ अच्युताय स्वाहा । श्री अच्युताय इदं न मम ।।
४८२) ॐ पाशखंडनाय स्वाहा । श्री पाशखंडनाय इदं न मम ।।
४८३) ॐ हंसस्थाय स्वाहा । श्री हंसस्थाय इदं न मम ।।
४८४) ॐ हंसतिलकाय स्वाहा । श्री हंसतिलकाय इदं न मम ।।
४८५) ॐ गगनस्थाय स्वाहा । श्री गगनस्थाय इदं न मम ।।
४८६) ॐ विहंगमाय स्वाहा । श्री विहंगमाय इदं न मम ।।
४८७) ॐ अलर्कवीर नाम्ने स्वाहा । श्री अलर्कवीर नाम्ने इदं न मम ।।
४८८) ॐ प्रज्ञापीठ निवासिने स्वाहा । श्री प्रज्ञापीठ निवासिने इदं न मम ।।
४८९) ॐ अमर्क वीररूपाय स्वाहा । श्री अमर्क वीररूपाय इदं न मम।।
४९०) ॐ भ्रमराय स्वाहा । श्री भ्रमराय इदं न मम ।।
४९१) ॐ भृंगभाविने स्वाहा । श्री भृंगभाविने इदं न मम ।।
४९२) ॐ कृमिकीटादि रूपाय स्वाहा । श्री कृमिकीटादि रूपाय इदं न मम ।।
४९३) ॐ पिपासाक्षुन्निवारकाय स्वाहा । श्री पिपासाक्षुन्निवारकाय इदं न मम ।।
४९४) ॐ प्रियकृते स्वाहा । श्री प्रियकृते इदं न मम ।।
४९५) ॐ प्रियवक्त्रे स्वाहा । श्री प्रियवक्त्रे इदं न मम ।।
४९६) ॐ स्थिरधये स्वाहा । श्री स्थिरधये इदं न मम ।।
४९७) ॐ शांतधये स्वाहा । श्री शांतधये इदं न मम ।।
४९८) ॐ स्वच्छाय स्वाहा । श्री स्वच्छाय इदं न मम ।।
४९९) ॐ स्वयंप्रकाशाय स्वाहा । श्री स्वयंप्रकाशाय इदं न मम ।।
५००) ॐ आत्मलीला विलासवते स्वाहा । श्री आत्मलीला विलासवते इदं न मम ।।
५०१) ॐ सलीलाय स्वाहा । श्री सलीलाय इदं न मम ।।
५०२) ॐ सविलासाय स्वाहा । श्री सविलासाय इदं न मम ।।
५०३) ॐ सक्रीडाय स्वाहा । श्री सक्रीडाय इदं न मम ।।
५०४) ॐ मायिनां प्रभवे स्वाहा । श्री मायिनां प्रभवे इदं न मम ।।
५०५) ॐ अक्रियाय स्वाहा । श्री अक्रियाय इदं न मम ।।
५०६) ॐ पुष्पवाकभर्त्रे स्वाहा । श्री पुष्पवाकभर्त्रे इदं न मम ।।
५०७) ॐ संहर्त्रे स्वाहा । श्री संहर्त्रे इदं न मम ।।
५०८) ॐ सर्वकृद् गुरवे स्वाहा । श्री सर्वकृद् गुरवे इदं न मम ।।
५०९) ॐ असंगाय स्वाहा । श्री असंगाय इदं न मम ।।
५१०) ॐ संगसुखदाय स्वाहा । श्री संगसुखदाय इदं न मम ।।

५११) ॐ सुरूपाय स्वाहा । श्री सुरूपाय इदं न मम ।।
५१२) ॐ उग्ररूपधुके स्वाहा । श्री उग्ररूपधुके इदं न मम ।।
५१३) ॐ निःसंगाय स्वाहा । श्री निःसंगाय इदं न मम ।।
५१४) ॐ अकृत्रिमाय स्वाहा । श्री अकृत्रिमाय इदं न मम ।।
५१५) ॐ निःशेषाय स्वाहा । श्री निःशेषाय इदं न मम ।।
५१६) ॐ द्वंद्वबाधकाय स्वाहा । श्री द्वंद्वबाधकाय इदं न मम ।।
५१७) ॐ निर्मत्सरा स्वाहा । श्री निर्मत्सरा इदं न मम ।।
५१८) ॐ निरारम्भाय स्वाहा । श्री निरारम्भाय इदं न मम ।।
५१९) ॐ निष्क्रियाय स्वाहा । श्री निष्क्रियाय इदं न मम ।।
५२०) ॐ निष्कलाय स्वाहा । श्री निष्कलाय इदं न मम ।।
५२१) ॐ ऋतवे स्वाहा । श्री ऋतवे इदं न मम ।।
५२२) ॐ भक्तानांस्वपाद पद्माय स्वाहा । श्री भक्तानांस्वपाद पद्माय इदं न मम ।।
५२३) ॐ निजलोकप्रद प्रभवे स्वाहा । श्री निजलोकप्रद प्रभवे इदं न मम ।।
५२४) ॐ सत्यज्ञाय स्वाहा । श्री सत्यज्ञाय इदं न मम ।।
५२५) ॐ सत्यवक्त्रे स्वाहा । श्री सत्यवक्त्रे इदं न मम ।।
५२६) ॐ सत्यरक्षण तत्पराय स्वाहा । श्री सत्यरक्षण तत्पराय इदं न मम ।।
५२७) ॐ योगज्ञाय स्वाहा । श्री योगज्ञाय इदं न मम ।।
५२८) ॐ योगवित् श्रेष्ठाय स्वाहा । श्री योगवित् श्रेष्ठाय इदं न मम ।।
५२९) ॐ योगयोगेश्वराय स्वाहा । श्री योगयोगेश्वराय इदं न मम ।।
५३०) ॐ पराय स्वाहा । श्री पराय इदं न मम ।।
५३१) ॐ योगेन्द्राय स्वाहा । श्री योगेन्द्राय इदं न मम ।।
५३२) ॐ योग मर्मज्ञान स्वाहा । श्री योग मर्मज्ञान इदं न मम ।।
५३३) ॐ योगिराज्ञे स्वाहा । श्री योगिराज्ञे इदं न मम ।।
५३४) ॐ योगिनांप्रभवे स्वाहा । श्री योगिनांप्रभवे इदं न मम ।।
५३५) ॐ ज्ञानेंद्राय स्वाहा । श्री ज्ञानेंद्राय इदं न मम ।।
५३६) ॐ सर्वसिद्धिनाम ईशाय स्वाहा । श्री सर्वसिद्धिनाम ईशाय इदं न मम ।।
५३७) ॐ त्रैलोक्यदीपकाय स्वाहा । श्री त्रैलोक्यदीपकाय इदं न मम ।।
५३८) ॐ सप्तस्वर्गान्तिगाय स्वाहा । श्री सप्तस्वर्गान्तिगाय इदं न मम ।।
५३९) ॐ सप्तपातालातीत रूपिणे स्वाहा । श्री सप्तपातालातीत रूपिणे इदं न मम ।।
५४०) ॐ अतितपिण्ड ब्रह्मांडाय स्वाहा । श्री अतितपिण्ड ब्रह्मांडाय इदं न मम ।।

५४१) ॐ जीवाय स्वाहा । श्री जीवाय इदं न मम ।।
५४२) ॐ विश्वाय स्वाहा । श्री विश्वाय इदं न मम ।।
५४३) ॐ शिवाय स्वाहा । श्री शिवाय इदं न मम ।।
५४४) ॐ निजाय स्वाहा । श्री निजाय इदं न मम ।।
५४५) ॐ शीतलाय स्वाहा । श्री शीतलाय इदं न मम ।।
५४६) ॐ हृदयोद्देशवतसे स्वाहा । श्री हृदयोद्देशवतसे इदं न मम ।।
५४७) ॐ सर्वतोगताय स्वाहा । श्री सर्वतोगताय इदं न मम ।।
५४८) ॐ सर्वभूत सुहृद् श्रेष्ठाय स्वाहा । श्री सर्वभूत सुहृद् श्रेष्ठाय इदं न मम ।।
५४९) ॐ सर्वभूत निवासिने स्वाहा । श्री सर्वभूत निवासिने इदं न मम ।।
५५०) ॐ रागाय स्वाहा । श्री रागाय इदं न मम ।।
५५१) ॐ वीतरागाय स्वाहा । श्री वीतरागाय इदं न मम ।।
५५२) ॐ त्यागाय स्वाहा । श्री त्यागाय इदं न मम ।।
५५३) ॐ त्याग त्यागिने स्वाहा । श्री त्याग त्यागिने इदं न मम ।।
५५४) ॐ सत्यज्ञानस्वरूपाय स्वाहा । श्री सत्यज्ञानस्वरूपाय इदं न मम ।।
५५५) ॐ नित्यतृप्ताय स्वाहा । श्री नित्यतृप्ताय इदं न मम ।।
५५६) ॐ विरक्ताय स्वाहा । श्री विरक्ताय इदं न मम ।।
५५७) ॐ विवर्णाय स्वाहा । श्री विवर्णाय इदं न मम ।।
५५८) ॐ वर्णरूपाय स्वाहा । श्री वर्णरूपाय इदं न मम ।।
५५९) ॐ विष्णवे स्वाहा । श्री विष्णवे इदं न मम ।।
५६०) ॐ अनित्यातीत रूपाय स्वाहा । श्री अनित्यातीत रूपाय इदं न मम ।।
५६१) ॐ नित्यरूपाय स्वाहा । श्री नित्यरूपाय इदं न मम ।।
५६२) ॐ अवर्णाय स्वाहा । श्री अवर्णाय इदं न मम ।।
५६३) ॐ आश्रमातीताय स्वाहा । श्री आश्रमातीताय इदं न मम ।।
५६४) ॐ प्रमाणातीताय स्वाहा । श्री प्रमाणातीताय इदं न मम ।।
५६५) ॐ अप्रमेयाय स्वाहा । श्री अप्रमेयाय इदं न मम ।।
५६६) ॐ अनिर्देश्याय स्वाहा । श्री अनिर्देश्याय इदं न मम ।।
५६७) ॐ शरीरेन्द्रिय नायकाय स्वाहा । श्री शरीरेन्द्रिय नायकाय इदं न मम ।।
५६८) ॐ तोषाय स्वाहा । श्री तोषाय इदं न मम ।।
५६९) ॐ परमसंतोषाय स्वाहा । श्री परमसंतोषाय इदं न मम ।।
५७०) ॐ शरण्याय स्वाहा । श्री शरण्याय इदं न मम ।।

५७१) ॐ शराय स्वाहा । श्री शराय इदं न मम ।।
५७२) ॐ आरम्भशून्याय स्वाहा । श्री आरम्भशून्याय इदं न मम ।।
५७३) ॐ सरलाय स्वाहा । श्री सरलाय इदं न मम ।।
५७४) ॐ करुणावरुणालयाय स्वाहा । श्री करुणावरुणालयाय इदं न मम ।।
५७५) ॐ शरणाय स्वाहा । श्री शरणाय इदं न मम ।।
५७६) ॐ निश्काञ्चनाय स्वाहा । श्री निश्काञ्चनाय इदं न मम ।।
५७७) ॐ विजरसे स्वाहा । श्री विजरसे इदं न मम ।।
५७८) ॐ धृतिमते स्वाहा । श्री धृतिमते इदं न मम ।।
५७९) ॐ मानिने स्वाहा । श्री मानिने इदं न मम ।।
५८०) ॐ विगत क्लेश संमर्गाय स्वाहा । श्री विगत क्लेश संमर्गाय इदं न मम ।।
५८१) ॐ अशेषा शुभवारणाय स्वाहा । श्री अशेषा शुभवारणाय इदं न मम ।।
५८२) ॐ मुलाधारस्थिताय ब्रह्मणे स्वाहा । श्री मुलाधारस्थिताय ब्रह्मणे इदं न मम ।।
५८३) ॐ स्वाधिष्ठान (स्थिताय) रमापतये स्वाहा । श्री स्वाधिष्ठान (स्थिताय) रमापतये इदं न मम ।।
५८४) ॐ मणिपूर गताय रुद्राय स्वाहा । श्री मणिपूर गताय रुद्राय इदं न मम ।।
५८५) ॐ अनाहतस्थितायेशाय स्वाहा । श्री अनाहतस्थितायेशाय इदं न मम ।।
५८६) ॐ सदाशिवाय स्वाहा । श्री सदाशिवाय इदं न मम ।।
५८७) ॐ पंचमुखाय स्वाहा । श्री पंचमुखाय इदं न मम ।।
५८८) ॐ विशुद्ध स्पष्ट दर्शनाय स्वाहा । श्री विशुद्ध स्पष्ट दर्शनाय इदं न मम ।।
५८९) ॐ आज्ञाचक्रस्थितश्वेते स्वाहा । श्री आज्ञाचक्रस्थितश्वेते इदं न मम ।।
५९०) ॐ ज्ञानदाताशिव गुरवे स्वाहा । श्री ज्ञानदाताशिव गुरवे इदं न मम ।।
५९१) ॐ सहस्त्रारे योगीहृदय संस्थितं स्वाहा । श्री सहस्त्रारे योगीहृदय संस्थितं इदं न मम ।।
५९२) ॐ परब्रह्मणे स्वाहा । श्री परब्रह्मणे इदं न मम ।।
५९३) ॐ इडा-पिंगला-सुषुम्नानां संगमे (स्थिताय) तीर्थ राजाय स्वाहा ।
श्री इडा-पिंगला-सुषुम्नानां संगमे (स्थिताय) तीर्थ राजाय इदं न मम ।।
५९४) ॐ अनादि प्रकाशाय स्वाहा । श्री अनादि प्रकाशाय इदं न मम ।।
५९५) ॐ विधिज्ञाय स्वाहा । श्री विधिज्ञाय इदं न मम ।।
५९६) ॐ विधिशाय स्वाहा । श्री विधिशाय इदं न मम ।।
५९७) ॐ अनेकान्तहीनाय स्वाहा । श्री अनेकान्तहीनाय इदं न मम ।।
५९८) ॐ चिरंचिद्विलासाय स्वाहा । श्री चिरंचिद्विलासाय इदं न मम ।।
५९९) ॐ निषेधादिशून्याय स्वाहा । श्री निषेधादिशून्याय इदं न मम ।।
६००) ॐ जगद्रक्षकाय स्वाहा । श्री जगद्रक्षकाय इदं न मम ।।

६०१) ॐ हितैकस्वरूपाय स्वाहा । श्री हितैकस्वरूपाय इदं न मम ।।
६०२) ॐ विश्वरूपाय स्वाहा । श्री विश्वरूपाय इदं न मम ।।
६०३) ॐ षट्चक्रातीतगं देवाय स्वाहा । श्री षट्चक्रातीतगं देवाय इदं न मम ।।
६०४) ॐ चतुर्दशचक्रातीताय स्वाहा । श्री चतुर्दशचक्रातीताय इदं न मम ।।
६०५) ॐ अष्ट चक्रातिक्रान्ताय स्वाहा । श्री अष्ट चक्रातिक्रान्ताय इदं न मम ।।
६०६) ॐ द्वादशाय पद्मासीनाय स्वाहा । श्री द्वादशाय पद्मासीनाय इदं न मम ।।
६०७) ॐ साधुध्याताय स्वाहा । श्री साधुध्याताय इदं न मम ।।
६०८) ॐ साध्वीशाय स्वाहा । श्री साध्वीशाय इदं न मम ।।
६०९) ॐ साधुनामिष्ट कारिणे स्वाहा । श्री साधुनामिष्ट कारिणे इदं न मम ।।
६१०) ॐ साधुप्रियाय स्वाहा । श्री साधुप्रियाय इदं न मम ।।
६११) ॐ साधुहृदस्थाय स्वाहा । श्री साधुहृदस्थाय इदं न मम ।।
६१२) ॐ साधुनाथाय स्वाहा । श्री साधुनाथाय इदं न मम ।।
६१३) ॐ सदाशिवाय स्वाहा । श्री सदाशिवाय इदं न मम ।।
६१४) ॐ अकर्त्रे स्वाहा । श्री अकर्त्रे इदं न मम ।।
६१५) ॐ स्फूर्तिदात्रे स्वाहा । श्री स्फूर्तिदात्रे इदं न मम ।।
६१६) ॐ विधात्रे स्वाहा । श्री विधात्रे इदं न मम।।
६१७) ॐ भक्तकामदुहे स्वाहा । श्री भक्तकामदुहे इदं न मम ।।
६१८) ॐ भक्त संनिधि संतुष्टाय स्वाहा । श्री भक्त संनिधि संतुष्टाय इदं न मम ।।
६१९) ॐ भूतानाम भयंकराय स्वाहा । श्री भूतानाम भयंकराय इदं न मम ।।
६२०) ॐ पृथक् चैतन्यरूपाय स्वाहा । श्री पृथक् चैतन्यरूपाय इदं न मम ।।
६२१) ॐ प्रमात्रे स्वाहा । श्री प्रमात्रे इदं न मम ।।
६२२) ॐ भूतभावनाय स्वाहा । श्री भूतभावनाय इदं न मम ।।
६२३) ॐ प्रमाचैतन्याय स्वाहा । श्री प्रमाचैतन्याय इदं न मम ।।
६२४) ॐ विक्षिप्त शुद्ध चैतन्याय स्वाहा । श्री विक्षिप्त शुद्ध चैतन्याय इदं न मम ।।
६२५) ॐ घटाकाशविनिर्मुक्ताय स्वाहा । श्री घटाकाशविनिर्मुक्ताय इदं न मम ।।
६२६) ॐ महदाकाशनिर्गताय स्वाहा । श्री महदाकाशनिर्गताय इदं न मम ।।
६२७) ॐ अवच्छिनाय स्वाहा । श्री अवच्छिनाय इदं न मम ।।
६२८) ॐ अवभासाय स्वाहा । श्री अवभासाय इदं न मम ।।
६२९) ॐ प्रतिबिंब प्रदर्शकाय स्वाहा । श्री प्रतिबिंब प्रदर्शकाय इदं न मम ।।
६३०) ॐ महदादि परावृत्तये स्वाहा । श्री महदादि परावृत्तये इदं न मम ।।

६३१) ॐ चिदाकाश परात्मकाय स्वाहा । श्री चिदाकाश परात्मकाय इदं न मम ।।
६३२) ॐ अभ्राकाशपराय स्वाहा । श्री अभ्राकाशपराय इदं न मम ।।
६३३) ॐ स्फूर्तये स्वाहा । श्री स्फूर्तये इदं न मम ।।
६३४) ॐ निजाकाशपराय गुरवे स्वाहा । श्री निजाकाशपराय गुरवे इदं न मम ।।
६३५) ॐ चैतन्याच्चेतनाय साराय स्वाहा । श्री चैतन्याच्चेतनाय साराय इदं न मम ।।
६३६) ॐ जीवाज्जीवाय स्वाहा । श्री जीवाज्जीवाय इदं न मम ।।
६३७) ॐ साक्षात्साक्षी स्वरूपाय स्वाहा । श्री साक्षात्साक्षी स्वरूपाय इदं न मम ।।
६३८) ॐ उपाधिरहिताय स्वाहा । श्री उपाधिरहिताय इदं न मम ।।
६३९) ॐ दोषातीताय स्वाहा । श्री दोषातीताय इदं न मम ।।
६४०) ॐ निर्दोषाय स्वाहा । श्री निर्दोषाय इदं न मम ।।
६४१) ॐ परमागाधधीये प्रभवे स्वाहा । श्री परमागाधधीये प्रभवे इदं न मम ।।
६४२) ॐ उपादानातिगाय स्वाहा । श्री उपादानातिगाय इदं न मम ।।
६४३) ॐ निमित्तातीताय स्वाहा । श्री निमित्तातीताय इदं न मम ।।
६४४) ॐ कारणव्यतिरेकाय स्वाहा । श्री कारणव्यतिरेकाय इदं न मम ।।
६४५) ॐ कार्यव्यतिकराय स्वाहा । श्री कार्यव्यतिकराय इदं न मम ।।
६४६) ॐ अन्वयातीत रूपाय स्वाहा । श्री अन्वयातीत रूपाय इदं न मम ।।
६४७) ॐ कर्तृत्वमद वर्जिताय स्वाहा । श्री कर्तृत्वमद वर्जिताय इदं न मम ।।
६४८) ॐ सर्वानुमान दृष्टाय स्वाहा । श्री सर्वानुमान दृष्टाय इदं न मम ।।
६४९) ॐ सर्वभासाव भासकाय स्वाहा । श्री सर्वभासाव भासकाय इदं न मम ।।
६५०) ॐ सर्वोपाधि विनिर्मुक्ताय स्वाहा । श्री सर्वोपाधि विनिर्मुक्ताय इदं न मम।।
६५१) ॐ सर्वसंग विवर्जिताय स्वाहा । श्री सर्वसंग विवर्जिताय इदं न मम ।।
६५२) ॐ शमादिषट्क संपन्नाय स्वाहा । श्री शमादिषट्क संपन्नाय इदं न मम ।।
६५३) ॐ मुमुक्षुपथ दर्शकाय स्वाहा । श्री मुमुक्षुपथ दर्शकाय इदं न मम ।।
६५४) ॐ निर्वेद वारकाय स्वाहा । श्री निर्वेद वारकाय इदं न मम ।।
६५५) ॐ श्रीमते स्वाहा । श्री श्रीमते इदं न मम ।।
६५६) ॐ साधनाभ्यास साधकाय स्वाहा । श्री साधनाभ्यास साधकाय इदं न मम ।।
६५७) ॐ उपदेश कर्त्रे स्वाहा । श्री उपदेश कर्त्रे इदं न मम ।।
६५८) ॐ विश्वात्मने स्वाहा । श्री विश्वात्मने इदं न मम ।।
६५९) ॐ मायाभास निवारकाय स्वाहा । श्री मायाभास निवारकाय इदं न मम ।।
६६०) ॐ स्वदेश भूषण श्रेष्ठाय स्वाहा । श्री स्वदेश भूषण श्रेष्ठाय इदं न मम ।।

६६१) ॐ शिवोऽहं ज्ञानदायकाय स्वाहा । श्री शिवोऽहं ज्ञानदायकाय इदं न मम ।।
६६२) ॐ ब्रह्माहमिति ज्ञानदाय स्वाहा । श्री ब्रह्माहमिति ज्ञानदाय इदं न मम ।।
६६३) ॐ अमूर्तिमान ज्ञानमूर्तये स्वाहा । श्री अमूर्तिमान ज्ञानमूर्तये इदं न मम ।।
६६४) ॐ संविदातीत रूपाय स्वाहा । श्री संविदातीत रूपाय इदं न मम ।।
६६५) ॐ स्वसंवेद्याय स्वाहा । श्री स्वसंवेद्याय इदं न मम ।।
६६६) ॐ गोचराय स्वाहा । श्री गोचराय इदं न मम ।।
६६७) ॐ देहत्रयातित रूपाय स्वाहा । श्री देहत्रयातित रूपाय इदं न मम ।।
६६८) ॐ त्रिकालातीत मूर्तये स्वाहा । श्री त्रिकालातीत मूर्तये इदं न मम ।।
६६९) ॐ भूतप्रेतादिनाथाय स्वाहा । श्री भूतप्रेतादिनाथाय इदं न मम ।।
६७०) ॐ कारुण्यमूर्तये स्वाहा । श्री कारुण्यमूर्तये इदं न मम ।।
६७१) ॐ उन्मत्तभाव रहिताय स्वाहा । श्री उन्मत्तभाव रहिताय इदं न मम ।।
६७२) ॐ मूकभाव विवर्जिताय स्वाहा । श्री मूकभाव विवर्जिताय इदं न मम ।।
६७३) ॐ जडाजडद्वयातीताय स्वाहा । श्री जडाजडद्वयातीताय इदं न मम ।।
६७४) ॐ अस्ति भाति प्रियातिगाय स्वाहा । श्री अस्ति भाति प्रियातिगाय इदं न मम ।।
६७५) ॐ रूपवेत्रे स्वाहा । श्री रूपवेत्रे इदं न मम ।।
६७६) ॐ स्वस्वरूपाव भासकाय स्वाहा । श्री स्वस्वरूपाव भासकाय इदं न मम ।।
६७७) ॐ सदातीताय स्वाहा । श्री सदातीताय इदं न मम ।।
६७८) ॐ चिदातीताय स्वाहा । श्री चिदातीताय इदं न मम ।।
६७९) ॐ आनंदातीताय स्वाहा । श्री आनंदातीताय इदं न मम ।।
६८०) ॐ आत्मवेत्रे स्वाहा । श्री आत्मवेत्रे इदं न मम ।।
६८१) ॐ आनन्ददाय स्वाहा । श्री आनन्ददाय इदं न मम ।।
६८२) ॐ जगत्स्वामिने स्वाहा । श्री जगत्स्वामिने इदं न मम ।।
६८३) ॐ जगदाभास नाशकाय स्वाहा । श्री जगदाभास नाशकाय इदं न मम ।।
६८४) ॐ शंकातीताय स्वाहा । श्री शंकातीताय इदं न मम ।।
६८५) ॐ निःशंकाय स्वाहा । श्री निःशंकाय इदं न मम ।।
६८६) ॐ सर्वशंकानिवर्तकाय स्वाहा । श्री सर्वशंकानिवर्तकाय इदं न मम ।।
६८७) ॐ एकदेशविवर्तिने स्वाहा । श्री एकदेशविवर्तिने इदं न मम ।।
६८८) ॐ सर्वदेशगताय स्वाहा । श्री सर्वदेशगताय इदं न मम ।।
६८९) ॐ समाधिसाक्षिणे स्वाहा । श्री समाधिसाक्षिणे इदं न मम ।।
६९०) ॐ चित्तज्ञाय स्वाहा । श्री चित्तज्ञाय इदं न मम ।।

६९१) ॐ उन्मनी नायकाय गुरवे स्वाहा । श्री उन्मनी नायकाय गुरवे इदं न मम ।।
६९२) ॐ अमराय स्वाहा । श्री अमराय इदं न मम ।।
६९३) ॐ सर्वयोगाधिगम्याय स्वाहा । श्री सर्वयोगाधिगम्याय इदं न मम ।।
६९४) ॐ सर्वभूतहिते रताय स्वाहा । श्री सर्वभूतहिते रताय इदं न मम ।।
६९५) ॐ सर्वरोगविहीनाय स्वाहा । श्री सर्वरोगविहीनाय इदं न मम ।।
६९६) ॐ सर्वभोग विवर्जिताय स्वाहा । श्री सर्वभोग विवर्जिताय इदं न मम ।।
६९७) ॐ सर्वसाध्य वरिष्ठाय स्वाहा । श्री सर्वसाध्य वरिष्ठाय इदं न मम ।।
६९८) ॐ सर्वनिर्वेद नाशकाय स्वाहा । श्री सर्वनिर्वेद नाशकाय इदं न मम ।।
६९९) ॐ सर्वबीजपतये स्वाहा । श्री सर्वबीजपतये इदं न मम ।।
७००) ॐ बीजाय स्वाहा । श्री बीजाय इदं न मम ।।
७०१) ॐ सर्वदाय स्वाहा । श्री सर्वदाय इदं न मम ।।
७०२) ॐ सर्वपावनाय स्वाहा । श्री सर्वपावनाय इदं न मम ।।
७०३) ॐ बीजकाय स्वाहा । श्री बीजकाय इदं न मम ।।
७०४) ॐ केवलाय स्वाहा । श्री केवलाय इदं न मम ।।
७०५) ॐ कर्त्रे स्वाहा । श्री कर्त्रे इदं न मम ।।
७०६) ॐ धर्त्रे स्वाहा । श्री धर्त्रे इदं न मम ।।
७०७) ॐ हर्त्रे स्वाहा । श्री हर्त्रे इदं न मम ।।
७०८) ॐ धुरंदराय स्वाहा । श्री धुरंदराय इदं न मम ।।
७०९) ॐ बीजरक्षा कराय स्वाहा । श्री बीजरक्षा कराय इदं न मम ।।
७१०) ॐ वंद्याय स्वाहा । श्री वंद्याय इदं न मम ।।
७११) ॐ बुद्ध युन्माद विनाशकाय स्वाहा । श्री बुद्ध युन्माद विनाशकाय इदं न मम ।।
७१२) ॐ गुणज्ञाय स्वाहा । श्री गुणज्ञाय इदं न मम ।।
७१३) ॐ गुणाधीशाय स्वाहा । श्री गुणाधीशाय इदं न मम ।।
७१४) ॐ शुभ्रकांतये स्वाहा । श्री शुभ्रकांतये इदं न मम ।।
७१५) ॐ शुभप्रदाय स्वाहा । श्री शुभप्रदाय इदं न मम ।।
७१६) ॐ निगमागम पारज्ञाय स्वाहा । श्री निगमागम पारज्ञाय इदं न मम ।।
७१७) ॐ रसरूपाय स्वाहा । श्री रसरूपाय इदं न मम ।।
७१८) ॐ रसात्मकाय स्वाहा । श्री रसात्मकाय इदं न मम ।।
७१९) ॐ सोमशीतलसाराय स्वाहा । श्री सोमशीतलसाराय इदं न मम ।।
७२०) ॐ कान्तिमते स्वाहा । श्री कान्तिमते इदं न मम ।।

७२१) ॐ अमृत द्रवाय स्वाहा । श्री अमृत द्रवाय इदं न मम ।।
७२२) ॐ शुद्धचैतन्य चंद्राय स्वाहा । श्री शुद्धचैतन्य चंद्राय इदं न मम ।।
७२३) ॐ शान्तशीत प्रकाशवते स्वाहा । श्री शान्तशीत प्रकाशवते इदं न मम ।।
७२४) ॐ अगामीने स्वाहा । श्री अगामीने इदं न मम ।।
७२५) ॐ अनुगामिने स्वाहा । श्री अनुगामिने इदं न मम ।।
७२६) ॐ भूतोप कृतितत्पराय स्वाहा । श्री भूतोप कृतितत्पराय इदं न मम ।।
७२७) ॐ नित्यलोकोपकारकाय स्वाहा । श्री नित्यलोकोपकारकाय इदं न मम ।।
७२८) ॐ शश्वज्जीवोपकारकाय स्वाहा । श्री शश्वज्जीवोपकारकाय इदं न मम ।।
७२९) ॐ निर्विषाय स्वाहा । श्री निर्विषाय इदं न मम ।।
७३०) ॐ विषहाराय स्वाहा । श्री विषहाराय इदं न मम ।।
७३१) ॐ सेवकाय स्वाहा । श्री सेवकाय इदं न मम ।।
७३२) ॐ प्राणरक्षकाय स्वाहा । श्री प्राणरक्षकाय इदं न मम ।।
७३३) ॐ अहिर्विष विनाशकाय स्वाहा । श्री अहिर्विष विनाशकाय इदं न मम ।।
७३४) ॐ महाविष विनाशकाय स्वाहा । श्री महाविष विनाशकाय इदं न मम ।।
७३५) ॐ कालसर्पविषघ्नाय स्वाहा । श्री कालसर्पविषघ्नाय इदं न मम ।।
७३६) ॐ त्रिदोष विषनाशनाय स्वाहा । श्री त्रिदोष विषनाशनाय इदं न मम ।।
७३७) ॐ तक्षकस्य विषहन्त्रे स्वाहा । श्री तक्षकस्य विषहन्त्रे इदं न मम ।।
७३८) ॐ मायाविष निवारकाय स्वाहा । श्री मायाविष निवारकाय इदं न मम ।।
७३९) ॐ पाषाण विषहन्त्रे स्वाहा । श्री पाषाण विषहन्त्रे इदं न मम ।।
७४०) ॐ सिद्धामृत रसायनाय स्वाहा । श्री सिद्धामृत रसायनाय इदं न मम ।।
७४१) ॐ अगाधाय स्वाहा । श्री अगाधाय इदं न मम ।।
७४२) ॐ अमृतरूपाय स्वाहा । श्री अमृतरूपाय इदं न मम ।।
७४३) ॐ श्री गुरवे स्वाहा । श्री श्री गुरवे इदं न मम ।।
७४४) ॐ अग्निस्तम्भ विनाशकाय स्वाहा । श्री अग्निस्तम्भ विनाशकाय इदं न मम ।।
७४५) ॐ जलस्तम्भ विनाशकाय स्वाहा । श्री जलस्तम्भ विनाशकाय इदं न मम ।।
७४६) ॐ वायुस्तम्भ विनाशकाय स्वाहा । श्री वायुस्तम्भ विनाशकाय इदं न मम ।।
७४७) ॐ जंगम स्थावर स्तम्भ निवारकाय स्वाहा ।
श्री जंगम स्थावर स्तम्भ निवारकाय इदं न मम ।।
७४८) ॐ मृत्युस्तम्भ निवारकाय स्वाहा । श्री मृत्युस्तम्भ निवारकाय इदं न मम ।।
७४९) ॐ कामस्तम्भ विनाशकाय स्वाहा । श्री कामस्तम्भ विनाशकाय इदं न मम ।।
७५०) ॐ मदस्तम्भ विनाशकाय स्वाहा । श्री मदस्तम्भ विनाशकाय इदं न मम ।।

७५१) ॐ क्रोधस्तम्भ विनाशकाय स्वाहा । श्री क्रोधस्तम्भ विनाशकाय इदं न मम ।।
७५२) ॐ लोभस्तम्भ निवारकाय स्वाहा । श्री लोभस्तम्भ निवारकाय इदं न मम ।।
७५३) ॐ ग्रहस्तम्भ निवारकाय स्वाहा । श्री ग्रहस्तम्भ निवारकाय इदं न मम ।।
७५४) ॐ मोहस्तम्भ निवारकाय स्वाहा । श्री मोहस्तम्भ निवारकाय इदं न मम ।।
७५५) ॐ धरास्तम्भ विनाशकाय स्वाहा । श्री धरास्तम्भ विनाशकाय इदं न मम ।।
७५६) ॐ भयस्तम्भ विनाशकाय स्वाहा । श्री भयस्तम्भ विनाशकाय इदं न मम ।।
७५७) ॐ रोगस्तम्भ विनाशकाय स्वाहा । श्री रोगस्तम्भ विनाशकाय इदं न मम ।।
७५८) ॐ अन्न वस्त्र सुवर्णादि भोगस्तम्भ निवारकाय स्वाहा ।
श्री अन्न वस्त्र सुवर्णादि भोगस्तम्भ निवारकाय इदं न मम ।।
७५९) ॐ चिंताव्याधि विनाशकाय स्वाहा । श्री चिंताव्याधि विनाशकाय इदं न मम ।।
७६०) ॐ साधूनां कल्याण कारिणे स्वाहा । श्री साधूनां कल्याण कारिणे इदं न मम ।।
७६१) ॐ कुष्ठापस्मार दारिद्रय विनाशकाय स्वाहा ।
श्री कुष्ठापस्मार दारिद्रय विनाशकाय इदं न मम ।।
७६२) ॐ शरणागत पालकाय स्वाहा । श्री शरणागत पालकाय इदं न मम ।।
७६३) ॐ कृपाम्बुदाय स्वाहा । श्री कृपाम्बुदाय इदं न मम ।।
७६४) ॐ दयासाराय स्वाहा । श्री दयासाराय इदं न मम ।।
७६५) ॐ सर्वदा भयदायकाय स्वाहा । श्री सर्वदा भयदायकाय इदं न मम ।।
७६६) ॐ ज्ञानाम्बुदाय स्वाहा । श्री ज्ञानाम्बुदाय इदं न मम ।।
७६७) ॐ ज्ञानसूर्याय स्वाहा । श्री ज्ञानसूर्याय इदं न मम ।।
७६८) ॐ ज्ञानाग्नेय स्वाहा । श्री ज्ञानाग्नेय इदं न मम ।।
७६९) ॐ ज्ञानचन्द्रमसे स्वाहा । श्री ज्ञानचन्द्रमसे इदं न मम ।।
७७०) ॐ आत्मबोध स्वरूपाय स्वाहा । श्री आत्मबोध स्वरूपाय इदं न मम ।।
७७१) ॐ आत्मविद्या फ़ल प्रदाय स्वाहा । श्री आत्मविद्या फ़ल प्रदाय इदं न मम ।।
७७२) ॐ सर्वसिद्धांत सिद्धाय स्वाहा । श्री सर्वसिद्धांत सिद्धाय इदं न मम ।।
७७३) ॐ साक्षी चैतन्यरूपवते स्वाहा । श्री साक्षी चैतन्यरूपवते इदं न मम ।।
७७४) ॐ निजबोध परीक्षज्ञाय स्वाहा । श्री निजबोध परीक्षज्ञाय इदं न मम ।।
७७५) ॐ साक्षिबोध परिक्षकाय स्वाहा । श्री साक्षिबोध परिक्षकाय इदं न मम ।।
७७६) ॐ बोधाबोध विशेषज्ञाय स्वाहा । श्री बोधाबोध विशेषज्ञाय इदं न मम ।।
७७७) ॐ ज्ञानाज्ञान परिक्षकाय स्वाहा । श्री ज्ञानाज्ञान परिक्षकाय इदं न मम ।।
७७८) ॐ अविद्यारूपविदे स्वाहा । श्री अविद्यारूपविदे इदं न मम ।।
७७९) ॐ सदसद्रूप विदे स्वाहा । श्री सदसद्रूप विदे इदं न मम ।।
७८०) ॐ चित्तानंद परिक्षज्ञाय स्वाहा । श्री चित्तानंद परिक्षज्ञाय इदं न मम ।।

७८१) ॐ ब्रह्मजीव परिक्षवते स्वाहा । श्री ब्रह्मजीव परिक्षवते इदं न मम ।।
७८२) ॐ प्रज्ञानंद परिक्षज्ञाय स्वाहा । श्री प्रज्ञानंद परिक्षज्ञाय इदं न मम ।।
७८३) ॐ योगसिद्धि परिक्षकाय स्वाहा । श्री योगसिद्धि परिक्षकाय इदं न मम ।।
७८४) ॐ तत्त्वमसि पदार्थज्ञाय स्वाहा । श्री तत्त्वमसि पदार्थज्ञाय इदं न मम ।।
७८५) ॐ क्रियागुण परिक्षवते स्वाहा । श्री क्रियागुण परिक्षवते इदं न मम ।।
७८६) ॐ सोऽहमोंकार तत्त्वज्ञाय स्वाहा । श्री सोऽहमोंकार तत्त्वज्ञाय इदं न मम ।।
७८७) ॐ बीजमंत्र परिक्षकाय स्वाहा । श्री बीजमंत्र परिक्षकाय इदं न मम ।।
७८८) ॐ विवेकत्याग युक्ताय स्वाहा । श्री विवेकत्याग युक्ताय इदं न मम ।।
७८९) ॐ दयाधैर्यव परिक्षवते स्वाहा । श्री दयाधैर्यव परिक्षवते इदं न मम ।।
७९०) ॐ भयाभय विशेषज्ञाय स्वाहा । श्री भयाभय विशेषज्ञाय इदं न मम ।।
७९१) ॐ भुक्तिमुक्ति परिक्षकाय स्वाहा । श्री भुक्तिमुक्ति परिक्षकाय इदं न मम ।।
७९२) ॐ निर्वेदालम्बनकराय स्वाहा । श्री निर्वेदालम्बनकराय इदं न मम ।।
७९३) ॐ परिकीर्ति परीक्षवते स्वाहा । श्री परिकीर्ति परीक्षवते इदं न मम ।।
७९४) ॐ द्रोहाद्रोह परिक्षज्ञाय स्वाहा । श्री द्रोहाद्रोह परिक्षज्ञाय इदं न मम ।।
७९५) ॐ मित्रामित्र परिक्षकाय स्वाहा । श्री मित्रामित्र परिक्षकाय इदं न मम ।।
७९६) ॐ शुद्धाशुद्ध परिक्षज्ञाय स्वाहा । श्री शुद्धाशुद्ध परिक्षज्ञाय इदं न मम ।।
७९७) ॐ बलाबल परिक्षकाय स्वाहा । श्री बलाबल परिक्षकाय इदं न मम ।।
७९८) ॐ सविकल्प परिक्षकाय स्वाहा । श्री सविकल्प परिक्षकाय इदं न मम ।।
७९९) ॐ निर्विकल्प परिक्षकाय स्वाहा । श्री निर्विकल्प परिक्षकाय इदं न मम ।।
८००) ॐ विदेहाय स्वाहा । श्री विदेहाय इदं न मम ।।
८०१) ॐ देहधारिणे स्वाहा । श्री देहधारिणे इदं न मम ।।
८०२) ॐ नाना देह समाश्रिताय स्वाहा । श्री नाना देह समाश्रिताय इदं न मम ।।
८०३) ॐ प्रमाप्रमेय विद्याय स्वाहा । श्री प्रमाप्रमेय विद्याय इदं न मम ।।
८०४) ॐ प्रमाणानां परिक्षकाय स्वाहा । श्री प्रमाणानां परिक्षकाय इदं न मम ।।
८०५) ॐ अधिष्ठान परिक्षाकृते स्वाहा । श्री अधिष्ठान परिक्षाकृते इदं न मम ।।
८०६) ॐ व्यक्ताव्यक्त परिक्षकाय स्वाहा । श्री व्यक्ताव्यक्त परिक्षकाय इदं न मम ।।
८०७) ॐ वैरनिर्वैर विद्यन्त्रे स्वाहा । श्री वैरनिर्वैर विद्यन्त्रे इदं न मम ।।
८०८) ॐ मोहोपाधि परिक्षकाय स्वाहा । श्री मोहोपाधि परिक्षकाय इदं न मम ।।
८०९) ॐ हंसहृत्स्थि प्रदीपाय स्वाहा । श्री हंसहृत्स्थि प्रदीपाय इदं न मम ।।
८१०) ॐ सुख दुःख परिक्षकाय स्वाहा । श्री सुख दुःख परिक्षकाय इदं न मम ।।

८११) ॐ निरानंदाय स्वाहा । श्री निरानंदाय इदं न मम ।।
८१२) ॐ सदानंदाय स्वाहा । श्री सदानंदाय इदं न मम ।।
८१३) ॐ साधुभक्त परिक्षकाय स्वाहा । श्री साधुभक्त परिक्षकाय इदं न मम ।।
८१४) ॐ अनाद्यनन्तरूपाय स्वाहा । श्री अनाद्यनन्तरूपाय इदं न मम ।।
८१५) ॐ स्थिरास्थिर परिक्षकाय स्वाहा । श्री स्थिरास्थिर परिक्षकाय इदं न मम ।।
८१६) ॐ आनंद सागराय स्वाहा । श्री आनंद सागराय इदं न मम ।।
८१७) ॐ मृतामृत परिक्षकाय स्वाहा । श्री मृतामृत परिक्षकाय इदं न मम ।।
८१८) ॐ बुद्धिचन्द्राय स्वाहा । श्री बुद्धिचन्द्राय इदं न मम ।।
८१९) ॐ मनोहारिमे स्वाहा । श्री मनोहारिमे इदं न मम ।।
८२०) ॐ भूतससाक्षिणे स्वाहा । श्री भूतससाक्षिणे इदं न मम ।।
८२१) ॐ शुभंकराय स्वाहा । श्री शुभंकराय इदं न मम ।।
८२२) ॐ समर्थासमर्थ रूपाय स्वाहा । श्री समर्थासमर्थ रूपाय इदं न मम ।।
८२३) ॐ विद्याध्यान परीक्षाय स्वाहा । श्री विद्याध्यान परीक्षाय इदं न मम ।।
८२४) ॐ भासाभास विशेषज्ञाय स्वाहा । श्री भासाभास विशेषज्ञाय इदं न मम ।।
८२५) ॐ मारणादि परिक्षकाय स्वाहा । श्री मारणादि परिक्षकाय इदं न मम ।।
८२६) ॐ विकारविषयातीताय स्वाहा । श्री विकारविषयातीताय इदं न मम ।।
८२७) ॐ नानामन्त्र परिक्षकाय स्वाहा । श्री नानामन्त्र परिक्षकाय इदं न मम ।।
८२८) ॐ जारणोच्चाटनेशाय स्वाहा । श्री जारणोच्चाटनेशाय इदं न मम ।।
८२९) ॐ मंत्रमूल परिक्षकाय स्वाहा । श्री मंत्रमूल परिक्षकाय इदं न मम ।।
८३०) ॐ पापताप परिक्षाकृते स्वाहा । श्री पापताप परिक्षाकृते इदं न मम ।।
८३१) ॐ मलनिर्मल परिक्षकाय स्वाहा । श्री मलनिर्मल परिक्षकाय इदं न मम ।।
८३२) ॐ अगोचर परिक्षाकृते स्वाहा । श्री अगोचर परिक्षाकृते इदं न मम ।।
८३३) ॐ सत्संतोष परिक्षकाय स्वाहा । श्री सत्संतोष परिक्षकाय इदं न मम ।।
८३४) ॐ उपदेश विशेषज्ञाय स्वाहा । श्री उपदेश विशेषज्ञाय इदं न मम ।।
८३५) ॐ निरालंब परिक्षकाय स्वाहा । श्री निरालंब परिक्षकाय इदं न मम ।।
८३६) ॐ नित्यानित्य परिक्षाकृते स्वाहा । श्री नित्यानित्य परिक्षाकृते इदं न मम ।।
८३७) ॐ जीवाजीव परिक्षकाय स्वाहा । श्री जीवाजीव परिक्षकाय इदं न मम ।।
८३८) ॐ अगाधपार विद्याविदे स्वाहा । श्री अगाधपार विद्याविदे इदं न मम ।।
८३९) ॐ भेदाभेद परीक्षकाय स्वाहा । श्री भेदाभेद परीक्षकाय इदं न मम ।।
८४०) ॐ पुरातनाय स्वाहा । श्री पुरातनाय इदं न मम ।।

८४१) ॐ पुराविदे स्वाहा । श्री पुराविदे इदं न मम ।।
८४२) ॐ ज्ञाताज्ञात परीक्षकाय स्वाहा । श्री ज्ञाताज्ञात परीक्षकाय इदं न मम ।।
८४३) ॐ अशब्दाय स्वाहा । श्री अशब्दाय इदं न मम ।।
८४४) ॐ लक्ष्यव्यंग स्वरूपवते स्वाहा । श्री लक्ष्यव्यंग स्वरूपवते इदं न मम ।।
८४५) ॐ त्रिपुटीनां परीक्षकाय स्वाहा । श्री त्रिपुटीनां परीक्षकाय इदं न मम ।।
८४६) ॐ वाचकाय स्वाहा । श्री वाचकाय इदं न मम ।।
८४७) ॐ वाच्याय स्वाहा । श्री वाच्याय इदं न मम ।।
८४८) ॐ क्षेत्राक्षेत्रज्ञविदे स्वाहा । श्री क्षेत्राक्षेत्रज्ञविदे इदं न मम ।।
८४९) ॐ मुमुक्षुपरमानंदाय स्वाहा । श्री मुमुक्षुपरमानंदाय इदं न मम ।।
८५०) ॐ साधनानां परीक्षकाय स्वाहा । श्री साधनानां परीक्षकाय इदं न मम ।।
८५१) ॐ विद्याकला विलासाय स्वाहा । श्री विद्याकला विलासाय इदं न मम ।।
८५२) ॐ वाग्वैभव परीक्षकाय स्वाहा । श्री वाग्वैभव परीक्षकाय इदं न मम ।।
८५३) ॐ परिणामाय स्वाहा । श्री परिणामाय इदं न मम ।।
८५४) ॐ विवर्ताय स्वाहा । श्री विवर्ताय इदं न मम ।।
८५५) ॐ त्यागात्याग परीक्षकाय स्वाहा । श्री त्यागात्याग परीक्षकाय इदं न मम ।।
८५६) ॐ क्षुत्पिपासा हराय स्वाहा । श्री क्षुत्पिपासा हराय इदं न मम ।।
८५७) ॐ दृष्टि सृष्टि परीक्षकाय स्वाहा । श्री दृष्टि सृष्टि परीक्षकाय इदं न मम ।।
८५८) ॐ शिष्योपदेशकर्त्रे स्वाहा । श्री शिष्योपदेशकर्त्रे इदं न मम ।।
८५९) ॐ भक्तकल्याण कारिणे स्वाहा । श्री भक्तकल्याण कारिणे इदं न मम ।।
८६०) ॐ वस्तुजात स्वरूपाय स्वाहा । श्री वस्तुजात स्वरूपाय इदं न मम ।।
८६१) ॐ परीक्षारूपिणे स्वाहा । श्री परीक्षारूपिणे इदं न मम ।।
८६२) ॐ विश्वमंगलाय स्वाहा । श्री विश्वमंगलाय इदं न मम ।।
८६३) ॐ अत्रिपुत्राय स्वाहा । श्री अत्रिपुत्राय इदं न मम ।।
८६४) ॐ अवधूताय स्वाहा । श्री अवधूताय इदं न मम ।।
८६५) ॐ चन्द्र दुर्वास बांधवाय स्वाहा । श्री चन्द्र दुर्वास बांधवाय इदं न मम ।।
८६६) ॐ अनसूयाहृदंभोज भास्कराय स्वाहा ।
श्री अनसूयाहृदंभोज भास्कराय इदं न मम ।।
८६७) ॐ श्रीपाद श्रीवल्लभाय स्वाहा । श्री श्रीपाद श्रीवल्लभाय इदं न मम ।।
८६८) ॐ श्रीनृसिंह सरस्वतये स्वाहा । श्री श्रीनृसिंह सरस्वतये इदं न मम ।।
८६९) ॐ अक्कलकोट निवासाय स्वाहा । श्री अक्कलकोट निवासाय इदं न मम ।।
८७०) ॐ यतिप्रताय वासुदेवाय स्वाहा । श्री यतिप्रताय वासुदेवाय इदं न मम ।।

८७१) ॐ भक्तिशास्त्रप्रणेत्रे स्वाहा । श्री भक्तिशास्त्रप्रणेत्रे इदं न मम ।।
८७२) ॐ सांख्यशास्त्र प्रवर्तकाय स्वाहा । श्री सांख्यशास्त्र प्रवर्तकाय इदं न मम ।।
८७३) ॐ कर्मयोग प्रवक्त्रे स्वाहा । श्री कर्मयोग प्रवक्त्रे इदं न मम ।।
८७४) ॐ राजयोग विवेचकाय स्वाहा । श्री राजयोग विवेचकाय इदं न मम ।।
८७५) ॐ मन्त्रज्ञाय स्वाहा । श्री मन्त्रज्ञाय इदं न मम ।।
८७६) ॐ मंत्रशास्त्रज्ञाय स्वाहा । श्री मंत्रशास्त्रज्ञाय इदं न मम ।।
८७७) ॐ तंत्रज्ञाय स्वाहा । श्री तंत्रज्ञाय इदं न मम ।।
८७८) ॐ तंत्रशास्त्रविदे स्वाहा । श्री तंत्रशास्त्रविदे इदं न मम ।।
८७९) ॐ कार्यज्ञाय स्वाहा । श्री कार्यज्ञाय इदं न मम ।।
८८०) ॐ कार्यकर्त्रे स्वाहा । श्री कार्यकर्त्रे इदं न मम ।।
८८१) ॐ सर्वज्ञाय स्वाहा । श्री सर्वज्ञाय इदं न मम ।।
८८२) ॐ जगदीश्वराय स्वाहा । श्री जगदीश्वराय इदं न मम ।।
८८३) ॐ नारायणांशाय स्वाहा । श्री नारायणांशाय इदं न मम ।।
८८४) ॐ ब्रह्मेशगुणभाव समन्विताय स्वाहा । श्री ब्रह्मेशगुणभाव समन्विताय इदं न मम ।।
८८५) ॐ श्रीदत्ताय स्वाहा । श्री श्रीदत्ताय इदं न मम ।।
८८६) ॐ सद्गुरवे स्वाहा । श्री सद्गुरवे इदं न मम ।।
८८७) ॐ जगन्नाथाय स्वाहा । श्री जगन्नाथाय इदं न मम ।।
८८८) ॐ जगत्पतये स्वाहा । श्री जगत्पतये इदं न मम ।।
८८९) ॐ स्वामिने स्वाहा । श्री स्वामिने इदं न मम ।।
८९०) ॐ जगत्कर्त्रे स्वाहा । श्री जगत्कर्त्रे इदं न मम ।।
८९१) ॐ जगत् धर्त्रे स्वाहा । श्री जगत् धर्त्रे इदं न मम ।।
८९२) ॐ जगत् हंत्रे स्वाहा । श्री जगत् हंत्रे इदं न मम ।।
८९३) ॐ जगत् प्रभवे स्वाहा । श्री जगत् प्रभवे इदं न मम ।।
८९४) ॐ जगत् पित्रे स्वाहा । श्री जगत् पित्रे इदं न मम ।।
८९५) ॐ जगन्मात्रे स्वाहा । श्री जगन्मात्रे इदं न मम ।।
८९६) ॐ जगदीशाय स्वाहा । श्री जगदीशाय इदं न मम ।।
८९७) ॐ जगद्धिताय स्वाहा । श्री जगद्धिताय इदं न मम ।।
८९८) ॐ योगाध्याक्षाय स्वाहा । श्री योगाध्याक्षाय इदं न मम ।।
८९९) ॐ योग युक्ताय स्वाहा । श्री योग युक्ताय इदं न मम ।।
९००) ॐ विदेहात्मने स्वाहा । श्री विदेहात्मने इदं न मम ।।

९०१) ॐ सहस्त्रजिते स्वाहा । श्री सहस्त्रजिते इदं न मम ।।
९०२) ॐ बहुविद्याय स्वाहा । श्री बहुविद्याय इदं न मम ।।
९०३) ॐ प्राज्ञाय स्वाहा । श्री प्राज्ञाय इदं न मम ।।
९०४) ॐ स्तुत्याय स्वाहा । श्री स्तुत्याय इदं न मम ।।
९०५) ॐ स्तुतिप्रियाय स्वाहा । श्री स्तुतिप्रियाय इदं न मम ।।
९०६) ॐ अभिवाद्याय स्वाहा । श्री अभिवाद्याय इदं न मम ।।
९०७) ॐ अकामाय स्वाहा । श्री अकामाय इदं न मम ।।
९०८) ॐ जितकामाय स्वाहा । श्री जितकामाय इदं न मम ।।
९०९) ॐ अरोगाय स्वाहा । श्री अरोगाय इदं न मम ।।
९१०) ॐ रागवर्जिताय स्वाहा । श्री रागवर्जिताय इदं न मम ।।
९११) ॐ अरौद्राय स्वाहा । श्री अरौद्राय इदं न मम ।।
९१२) ॐ रुद्ररूपाय स्वाहा । श्री रुद्ररूपाय इदं न मम ।।
९१३) ॐ मायाचक्र प्रवर्तकाय स्वाहा । श्री मायाचक्र प्रवर्तकाय इदं न मम ।।
९१४) ॐ अहंताग्राह निर्मुक्ताय स्वाहा । श्री अहंताग्राह निर्मुक्ताय इदं न मम ।।
९१५) ॐ जगज्जीवन स्वाहा । श्री जगज्जीवन इदं न मम ।।
९१६) ॐ आश्रयाय स्वाहा । श्री आश्रयाय इदं न मम ।।
९१७) ॐ प्रज्ञेशाय स्वाहा । श्री प्रज्ञेशाय इदं न मम ।।
९१८) ॐ भेदशून्याय स्वाहा । श्री भेदशून्याय इदं न मम ।।
९१९) ॐ मुक्तानां परमागतये स्वाहा । श्री मुक्तानां परमागतये इदं न मम ।।
९२०) ॐ आदिनाथाय स्वाहा । श्री आदिनाथाय इदं न मम ।।
९२१) ॐ मूलरूपाय स्वाहा । श्री मूलरूपाय इदं न मम ।।
९२२) ॐ दुःखदावानलाय गुरवे स्वाहा । श्री दुःखदावानलाय गुरवे इदं न मम ।।
९२३) ॐ कालान्तकाय स्वाहा । श्री कालान्तकाय इदं न मम ।।
९२४) ॐ अन्तहीनाय स्वाहा । श्री अन्तहीनाय इदं न मम ।।
९२५) ॐ प्रत्यक् ब्रह्म सनातनाय स्वाहा । श्री प्रत्यक् ब्रह्म सनातनाय इदं न मम ।।
९२६) ॐ मृत्युंजयाय स्वाहा । श्री मृत्युंजयाय इदं न मम ।।
९२७) ॐ जीवनाय स्वाहा । श्री जीवनाय इदं न मम ।।
९२८) ॐ सर्वकर्मफ़लाश्रयाय स्वाहा । श्री सर्वकर्मफ़लाश्रयाय इदं न मम ।।
९२९) ॐ हंससाक्षिणे स्वाहा । श्री हंससाक्षिणे इदं न मम ।।
९३०) ॐ क्षितीशाय स्वाहा । श्री क्षितीशाय इदं न मम ।।

९३१) ॐ गंभीराय स्वाहा । श्री गंभीराय इदं न मम ।।
९३२) ॐ बलवाहनाय स्वाहा । श्री बलवाहनाय इदं न मम ।।
९३३) ॐ फणीन्द्रपूजिताय स्वाहा । श्री फणीन्द्रपूजिताय इदं न मम ।।
९३४) ॐ भिक्षवे स्वाहा । श्री भिक्षवे इदं न मम ।।
९३५) ॐ डमरुधारिणे प्रभवे स्वाहा । श्री डमरुधारिणे प्रभवे इदं न मम ।।
९३६) ॐ खगेन्द्र वाहनाय स्वाहा । श्री खगेन्द्र वाहनाय इदं न मम ।।
९३७) ॐ श्रेष्ठाय स्वाहा । श्री श्रेष्ठाय इदं न मम ।।
९३८) ॐ ओंकाराय स्वाहा । श्री ओंकाराय इदं न मम ।।
९३९) ॐ दिव्यनादिने स्वाहा । श्री दिव्यनादिने इदं न मम ।।
९४०) ॐ ज्योतिर्मयाय स्वाहा । श्री ज्योतिर्मयाय इदं न मम ।।
९४१) ॐ वासुदेवाय स्वाहा । श्री वासुदेवाय इदं न मम ।।
९४२) ॐ देवासुरवर प्रदाय स्वाहा । श्री देवासुरवर प्रदाय इदं न मम ।।
९४३) ॐ अतीन्द्रियाय स्वाहा । श्री अतीन्द्रियाय इदं न मम ।।
९४४) ॐ यतीन्द्राय स्वाहा । श्री यतीन्द्राय इदं न मम ।।
९४५) ॐ उपेन्द्राय स्वाहा । श्री उपेन्द्राय इदं न मम ।।
९४६) ॐ वामनाय बटवे स्वाहा । श्री वामनाय बटवे इदं न मम ।।
९४७) ॐ मत्साय स्वाहा । श्री मत्साय इदं न मम ।।
९४८) ॐ कमठरूपाय स्वाहा । श्री कमठरूपाय इदं न मम ।।
९४९) ॐ कारणसूकराय स्वाहा । श्री कारणसूकराय इदं न मम ।।
९५०) ॐ प्रल्हादप्रिय रूपाय स्वाहा । श्री प्रल्हादप्रिय रूपाय इदं न मम ।।
९५१) ॐ जामदग्न्याय स्वाहा । श्री जामदग्न्याय इदं न मम ।।
९५२) ॐ राघवाय स्वाहा । श्री राघवाय इदं न मम ।।
९५३) ॐ नारदाय स्वाहा । श्री नारदाय इदं न मम ।।
९५४) ॐ कपिलाचार्याय स्वाहा । श्री कपिलाचार्याय इदं न मम ।।
९५५) ॐ गजेन्द्रभयहारकाय स्वाहा । श्री गजेन्द्रभयहारकाय इदं न मम ।।
९५६) ॐ उद्धवाय स्वाहा । श्री उद्धवाय इदं न मम ।।
९५७) ॐ बलरामाय स्वाहा । श्री बलरामाय इदं न मम ।।
९५८) ॐ वासुदेवा नंदन वर्धनाय स्वाहा । श्री वासुदेवा नंदन वर्धनाय इदं न मम ।।
९५९) ॐ तपोनिधये स्वाहा । श्री तपोनिधये इदं न मम ।।
९६०) ॐ तपोमूर्तये स्वाहा । श्री तपोमूर्तये इदं न मम ।।

९६१) ॐ तपोवृद्धाय स्वाहा । श्री तपोवृद्धाय इदं न मम ।।
९६२) ॐ तपोधनाय स्वाहा । श्री तपोधनाय इदं न मम ।।
९६३) ॐ तपोनिष्ठाय स्वाहा । श्री तपोनिष्ठाय इदं न मम ।।
९६४) ॐ तपस्विने स्वाहा । श्री तपस्विने इदं न मम ।।
९६५) ॐ सुतपसे स्वाहा । श्री सुतपसे इदं न मम ।।
९६६) ॐ तपसांप्रभवे स्वाहा । श्री तपसांप्रभवे इदं न मम ।।
९६७) ॐ अनंत गुण युक्ताय स्वाहा । श्री अनंत गुण युक्ताय इदं न मम ।।
९६८) ॐ अनंत फलदायकाय स्वाहा । श्री अनंत फलदायकाय इदं न मम ।।
९६९) ॐ अनंतरूपाय स्वाहा । श्री अनंतरूपाय इदं न मम ।।
९७०) ॐ अनंतात्मने स्वाहा । श्री अनंतात्मने इदं न मम ।।
९७१) ॐ सत्यधर्म प्रकाशकाय स्वाहा । श्री सत्यधर्म प्रकाशकाय इदं न मम ।।
९७२) ॐ चराचर प्रतिपालाय स्वाहा । श्री चराचर प्रतिपालाय इदं न मम ।।
९७३) ॐ परम ज्योतिर्मय स्वरूपाय स्वाहा । श्री परम ज्योतिर्मय स्वरूपाय इदं न मम ।।
९७४) ॐ चंद्रसूर्याग्नि लोचनाय स्वाहा । श्री चंद्रसूर्याग्नि लोचनाय इदं न मम ।।
९७५) ॐ सर्वैश्वर्ययुक्ताय स्वाहा । श्री सर्वैश्वर्ययुक्ताय इदं न मम ।।
९७६) ॐ दिव्य अमूर्त व्यापकाय स्वाहा । श्री दिव्य अमूर्त व्यापकाय इदं न मम ।।
९७७) ॐ सर्वयोग परायणाय स्वाहा । श्री सर्वयोग परायणाय इदं न मम ।।
९७८) ॐ अद्वैत परब्रह्माय स्वाहा । श्री अद्वैत परब्रह्माय इदं न मम ।।
९७९) ॐ पंचभूतैक दीप्ताय स्वाहा । श्री पंचभूतैक दीप्ताय इदं न मम ।।
९८०) ॐ सद्चिद्विश्वमयाय स्वाहा । श्री सद्चिद्विश्वमयाय इदं न मम ।।
९८१) ॐ शब्दब्रह्म प्रकाशवते स्वाहा । श्री शब्दब्रह्म प्रकाशवते इदं न मम ।।
९८२) ॐ जितेंद्रिय जितज्ञाय स्वाहा । श्री जितेंद्रिय जितज्ञाय इदं न मम ।।
९८३) ॐ यज्ञप्रियाय सिद्धाय स्वाहा । श्री यज्ञप्रियाय सिद्धाय इदं न मम ।।
९८४) ॐ यज्ञभोक्त्रेच यज्ञ रूपाय स्वाहा । श्री यज्ञभोक्त्रेच यज्ञ रूपाय इदं न मम ।।
९८५) ॐ यज्ञसूत्रधरः ब्रह्मन् रूपाय स्वाहा ।
श्री यज्ञसूत्रधरः ब्रह्मन् रूपाय इदं न मम ।।
९८६) ॐ स्वयंप्रकाश सदापूर्णाय स्वाहा । श्री स्वयंप्रकाश सदापूर्णाय इदं न मम ।।
९८७) ॐ हिरण्यगर्भ रूपाय स्वाहा । श्री हिरण्यगर्भ रूपाय इदं न मम ।।
९८८) ॐ स्वहृदयकमलालयाय स्वाहा । श्री स्वहृदयकमलालयाय इदं न मम ।।
९८९) ॐ जगद् आराध्याय स्वाहा । श्री जगद् आराध्याय इदं न मम ।।
९९०) ॐ विश्वस्य धारिणाय स्वाहा । श्री विश्वस्य धारिणाय इदं न मम ।।

९९१) ॐ नादः ज्योति परिपूर्णाय स्वाहा । श्री नादः ज्योति परिपूर्णाय इदं न मम ।।
९९२) ॐ प्रशान्त चित्तरूपाय स्वाहा । श्री प्रशान्त चित्तरूपाय इदं न मम ।।
९९३) ॐ सर्वव्यापिन ॐकाराय स्वाहा । श्री सर्वव्यापिन ॐकाराय इदं न मम ।।
९९४) ॐ भक्तकाम कल्पद्रुम स्वामिने स्वाहा ।
श्री भक्तकाम कल्पद्रुम स्वामिने इदं न मम ।।
९९५) ॐ वेदशास्त्र परिज्ञाय स्वाहा । श्री वेदशास्त्र परिज्ञाय इदं न मम ।।
९९६) ॐ सर्वव्यापिनमीशानं स्वाहा । श्री सर्वव्यापिनमीशानं इदं न मम ।।
९९७) ॐ अनंत पुरुषोत्तमाय स्वाहा । श्री अनंत पुरुषोत्तमाय इदं न मम ।।
९९८) ॐ ब्रह्माण्डरूपाय स्वाहा । श्री ब्रह्माण्डरूपाय इदं न मम ।।
९९९) ॐ अमृत कन्यायै स्वाहा । श्री अमृत कन्यायै इदं न मम ।।
१०००) ॐ आदिशक्ती सर्व मंगला, दिव्य मंगला, परम मंगला भगवती सुवर्ण चण्डिके स्वाहा ।
श्री आदिशक्ती सर्व मंगला, दिव्य मंगला, परम मंगला भगवती सुवर्ण चण्डिके इदं न मम ।।
१००१) ॐ परब्रह्म प्रणवरूपाय स्वाहा । श्री परब्रह्म प्रणवरूपाय इदं न मम ।।
१००२) ॐ परिपूर्णावताराय स्वाहा | श्री परिपूर्णावताराय इदं न मम ।।
१००३) ॐ प्रत्यक्ष परब्रह्मणे स्वाहा | श्री प्रत्यक्ष परब्रह्मणे इदं न मम ।।
१००४) ॐ सत्यज्योतिरुद्भवाय महासद्गुरवे स्वाहा ।
श्री सत्यज्योतिरुद्भवाय महासद्गुरवे इदं न मम ।।
१००५) ॐ ज्योतिर्लिंगाय स्वाहा । श्री ज्योतिर्लिंगाय इदं न मम ।।
१००६) ॐ सत्यलोकाधिशाय स्वाहा । श्री सत्यलोकाधिशाय इदं न मम ।।
१००७) ॐ श्रीसच्चिदानंद परमात्माय स्वामिने स्वाहा ।
श्री श्रीसच्चिदानंद परमात्माय स्वामिने इदं न मम ।।

देवी अथर्वशीर्ष स्वाहाकार

ॐ सर्वे वै देवा देवीमुपतस्थुः कासि त्वं महादेवीति स्वाहा ।। १ ।।

साब्रवीत् - अहं ब्रह्मस्वरुपिणी । मत्तः प्रकृतिपुरुषात्मकं जगत् । शून्यं चाशून्यं च स्वाहा ।। २ ।।

अहमानन्दानानन्दौ । अहं विज्ञानाविज्ञाने । अहं ब्रह्माब्रह्मणी वेदितव्ये ।
अहं पञ्चभूतान्य-पञ्चभूतानि । अहमखिलं जगत् स्वाहा ।। ३ ।।

वेदोऽहमवेदोऽहम् । विद्याहमविद्याहम् । अजाहमनजाहम् ।
अधश्चोर्ध्वं च तिर्यक्चाहम् स्वाहा ।। ४ ।।

अहं रुद्रेभिर्वसुभिश्चरामि । अहमादित्यैरुत विश्वदेवैः । अहं मित्रावरुणावुभौ बिभर्मि ।
अहमिन्द्राग्नी अहमश्विनावुभौ स्वाहा ।। ५ ।।

अहं सोमं त्वष्टारं पूषणं भगं दधामि ।
अहं विष्णुमुरुक्रमं ब्रह्माणमुत प्रजापतिं दधामि स्वाहा ।। ६ ।।

अहं दधामि द्रविणं हविष्मते सुप्राव्ये यजमानाय सुन्वते । अहं राष्ट्री संङ्गमनी वसूनां
चिकितुषी प्रथमा यज्ञियानाम् । अहं सुवे पितरमस्य मूर्धन्मम योनिरप्स्वन्तः समुद्रे ।
य एवं वेद । स दैवीं सम्पदमाप्नोति स्वाहा ।। ७ ।।

ते देवा अब्रुवन्-नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः ।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम् स्वाहा ।। ८ ।।

तामग्निवर्णां तपसा ज्वलन्तीं वैरोचनीं कर्मफलेषु जुष्टाम् ।
दुर्गां देवीं शरणं प्रपद्या-महेऽसुरान्नाशयित्र्यै ते नमः स्वाहा ।। ९ ।।

देवीं वाचमजनयन्त देवास्तां विश्वरुपाः पशवो वदन्ति ।
सा नो मन्द्रेषमूर्जं दुहाना धेनुर्वागस्मानुप सुष्टुतैतु स्वाहा ।। १० ।।
कालरात्रीं ब्रह्मस्तुतां वैष्णवीं स्कन्दमातरम् ।

सरस्वतीमदितिं दक्षदुहितरं नमामः पावनां शिवाम् स्वाहा ।। ११ ।।

महालक्ष्म्यै च विद्महे सर्वशक्त्यै च धीमहि । तन्नो देवी प्रचोदयात् स्वाहा ।। १२ ।।

अदितिर्ह्यजनिष्ट दक्ष या दुहिता तव । तां देवा अन्वजायन्त भद्रा अमृतबन्धवः स्वाहा ।। १३ ।।

कामो योनिः कमला वज्रपाणिर्गुहा हसा मातरिश्वाभ्रमिन्द्रः ।
पुनर्गुहा सकला मायया च पुरुच्यैषा विश्वमातादिविद्योम् स्वाहा ।। १४ ।।

एषाऽऽत्मशक्तिः । एषा विश्वमोहिनी । पाशाङ्कुशधनुर्बाणधरा । एषा श्रीमहाविद्या ।
य एवं वेद स शोकं तरति स्वाहा ।। १५ ।।

नमस्ते अस्तु भगवति मातरस्मान् पाहि सर्वतः स्वाहा ।। १६ ।।

सैषाष्टौ वसवः। सैषैकादश रुद्राः । सैषा द्वादशादित्याः । सैषा विश्वेदेवाः सोमपा असोमपाश्च ।
सैषा यातुधाना असुरा रक्षांसि पिशाचा यक्षाः सिद्धाः ।
सैषा सत्त्वरजस्तमांसि । सैषा ब्रह्मविष्णुरुद्ररूपिणी। सैषा प्रजापतीन्द्रमनवः ।
सैषा ग्रहनक्षत्रज्योतिंषि । कलाकाष्ठादिकालरूपिणी । तामहं प्रणौमि नित्यम् स्वाहा ।। १७ ।।

पापापहारिणिं देवीं भुक्तिमुक्तिप्रदायिनीम् ।
अनन्तां विजयां शुद्धां शरण्यां शिवदां शिवाम् स्वाहा ।। १८ ।।

वियदीकारसंयुक्तं वीतिहोत्रसमन्वितम् ।
अर्धेन्दुलसितं देव्या बीजं सर्वार्थसाधकम् स्वाहा ।। १९ ।।

एवमेकाक्षरं ब्रह्म यतयः शुद्धचेतसः । ध्यायंति परमानन्दमया ज्ञानांबुराशयः स्वाहा ।। २० ।।

वाङ्माया ब्रह्मसूस्तस्मात् षष्ठं वक्त्रसमन्वितम् । सूर्योऽवामश्रोत्रबिंदुसंयुक्तष्टात्तृतीयकः ।
नारायणेन सम्मिश्रो वायुश्चाधरयुक् ततः ।
विच्चे नवार्णकोऽर्णः स्यान्महदानन्ददायकः स्वाहा ।। २१ ।।

हृत्पुण्डरीकमध्यस्थां प्रातःसूर्यसमप्रभाम् | पाशाङ्कुशधरां सौम्यां वरदाभयहस्तकाम् |
त्रिनेत्रां रक्तवसनां भक्तकामदुधां भजे स्वाहा || २२ ||

नमामि त्वां महादेवीं महाभयविनाशिनीम् | महादुर्गप्रशमनीं महाकारुण्यरूपिणीम् स्वाहा || २३ ||

यस्याः स्वरूपं ब्रह्मादयो न जानन्ति तस्मा-दुच्यते अज्ञेया |
यस्या अन्तो न लभ्यते तस्मा-दुच्यते अनन्ता | यस्या लक्ष्यं नोपलक्ष्यते तस्मा-दुच्यते अलक्ष्या |
यस्या जननं नोपलभ्यते तस्मा-दुच्यते अजा | एकैव सर्वत्र वर्तते तस्मादुच्यते एका |
एकैव विश्वरुपिणी तस्मादुच्यते नैका |
अत एवोच्यते अज्ञेयानन्तालक्ष्याजैका नैकेति स्वाहा || २४ ||

मंत्राणां मातृका देवी शब्दानां ज्ञानरूपिणी | ज्ञानानां चिन्मयातीता शून्यानां शून्यसाक्षिणी |
यस्याः परतरं नास्ति सैषा दुर्गा प्रकीर्तिता स्वाहा || २५ ||

तां दुर्गां दुर्गमां देवीं दुराचारविघातिनीम् |
नमामि भवभीतोऽहं संसारार्णवतारिणीम् स्वाहा || २६ ||

फलश्रुति
इदमथर्वशीर्षं योऽधीते स पञ्चाथर्वशीर्षजपफलमाप्नोति |
इदमथर्वशीर्षमज्ञात्वा योऽर्चां स्थापयति - शतलक्षं प्रजत्वापि सोऽर्चासिद्धिं न विन्दति |
शतमष्टोत्तरं चास्य पुरश्चर्याविधिः स्मृतः | दशवारं पाठेद्यस्तु सद्यः पापैः प्रमुच्यते |
महादुर्गाणि तरति महादेव्याः प्रसादतः | सायमधीयानो दिवसकृतं पापं नाशयति |
प्रातरधीयानो रात्रिकृतं पापं नाशयति | सायं प्रातः प्रयुञ्जानो अपापो भवति |
निशीथे तुरीयसंध्यायां जप्त्वा वाक् सिद्धिर्भवति | नूतनायां प्रतिमायां जप्त्वा देवतासान्निध्यं भवति |
प्राणप्रतिष्ठायां जप्त्वा प्राणानां प्रतिष्ठा भवति | भौमाश्विन्यां महादेवीसंनिधौ जप्त्वा महामृत्युं तरति |
स महामृत्युं तरति य एवं वेद| इत्युपनिषत् ||

श्रीसूक्त स्वाहाकार

ॐ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्रजाम् ।
चंन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो ममावह स्वाहा ।। १ ।।

ॐ तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम् ।
यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम् स्वाहा ।। २ ।।

ॐ अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनादप्रबोधिनीम् ।
श्रियं देवीमुपह्वये श्रीर्मा देवीजुषताम् स्वाहा ।। ३ ।।

ॐ कां सोस्मितां हिरण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलंतीं तृप्तां तर्पयन्तीम् ।
पद्मे स्थितां पद्मवर्णां तामिहोपह्वये श्रियम् स्वाहा ।। ४ ।।

ॐ चंद्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम् ।
तां पद्मिनीमीं शरणमहं प्रपद्ये अलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणे स्वाहा ।। ५ ।।

ॐ आदित्यवर्णे तपसोऽधिजातो वनस्पतिस्तव वृक्षोथ बिल्वः ।
तस्य फलानि तपसा नुदन्तु मायान्तरायाश्च बाह्या अलक्ष्मीः स्वाहा ।। ६ ।।

ॐ उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह ।
प्रादुर्भूतोऽस्मिराष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धिं ददातु मे स्वाहा ।। ७ ।।

ॐ क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठाम् अलक्ष्मीं नाशयाम्यहम् ।
अभूतिमसमृद्धिं च सर्वां निर्णुद मे गृहात् स्वाहा ।। ८ ।।

ॐ गंधद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणींम् ।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम् स्वाहा ।। ९ ।।

ॐ मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि |
पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः स्वाहा || १० ||

ॐ कर्दमेन प्रजाभूता मयि संभव कर्दम |
श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम् स्वाहा || ११ ||

ॐ आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे |
नि च देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले स्वाहा || १२ ||

ॐ आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम् |
सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह स्वाहा || १३ ||

ॐ आर्द्रां यःकरिणीं यष्टिं पिंगलां पद्ममालिनीम् |
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह स्वाहा || १४ ||

ॐ तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम् |
यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावो दास्योऽश्वान्विन्देयं पुरुषानहम् स्वाहा || १५ ||

(पुढील मंत्राचे फक्त उच्चारण करावे)
यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम् |
सूक्तं पंचदशर्चं च श्रीकामः सततं जपेत् || १६ ||

माँ मंगल चण्डिका मंत्र स्वाहाकार (१०८ वेळा)
ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं सर्वपूज्ये देवी मंगल चण्डिके ऐं क्रूं फट् स्वाहा ||

महामृत्युंजय मंत्र स्वाहाकार (१०८ वेळा)
ॐ त्र्यंबकं यजामहे, सुगंधिं पुष्टिवर्धनं ।
उर्वारुकमिव बंधनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात् स्वाहा ||

व्याहृति होम
भूः स्वाहा अग्नये इदं न मम | भुवः स्वाहा वायवे इदं न मम |
स्वः स्वाहा सूर्याय इदं न मम | भू र्भुवः स्वः स्वाहा प्रजापतये इदं न मम ||

पूर्णाहुती मंत्र

ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात् पूर्णमुदच्यते | पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते |
ॐ सर्वं वै पूर्णगँ स्वाहा | (१/३ तूप अग्निला अर्पण करावे.)
ॐ सर्वं वै पूर्णगँ स्वाहा | (१/२ तूप अग्निला अर्पण करावे.)
ॐ सर्वं वै पूर्णगँ स्वाहा | (शिल्लक राहिलेले तूप अग्निला अर्पण करावे.)
ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात् पूर्णमुदच्यते | पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते |
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ||

शांति मंत्र

ॐ असतो मा सद्गमय | तमसो मा ज्योतिर्गमय | मृत्योर्माऽमृतं गमय |
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ||

ॐ सहनाववतु सह नौ भुनक्तु सहवीर्यं करवावहै | तेजस्विनावधीतमस्तु मा विद्विषावहै |
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ||

सर्वेऽपिसुखिनः सन्तु सर्वे सन्तु निरामयः | सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चित् दुःखमाप्नुयात् |
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ||

ॐ वायुरनिलममृतमथेदं भस्मान्तं शरीरम् | ॐ क्रतो स्मर कृतं स्मर क्रतो स्मर कृतं स्मर ||
ॐ अग्ने नय सुपथा राये अस्मान्विश्वानि देव वयुनानि विद्वान् |
युयोध्यस्म ज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नम उक्तिं विधेम ||
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ||

सप्तश्लोकी

यदा सृष्टं जगत्सर्वं तदा लोकपितामहः । चतुर्वेदसमायुक्तं शाश्वतं धर्ममादिशत् ॥ १ ॥
किं सत्कर्म किमध्यात्मं यदि विज्ञातुमर्हति । सर्वशास्त्रेषु ग्रन्थेषु प्रमाणं परमं श्रुतिः ॥ २ ॥
अस्पष्टं च कदा स्पष्टं तत्त्वज्ञानविवेचनम् । अन्यत्र लभ्यते किंतु प्रमाणं परमं श्रुतिः ॥ ३ ॥
आर्षग्रन्थेषु सर्वेषु श्रुतिप्रामाण्यमेव च । सर्वतः सारमादद्यान्निजकल्याणहेतवे ।। ४ ।।
शुष्कवादरताः केचिन्नान्यदस्तीति वादिनः । सर्वे ते विलयं यान्ति मिथ्याकलहकारिणः ।॥ ५ ॥

नास्तिका वेदनिन्दकाः पाखण्डा वेददूषकाः । एते सर्वे विनश्यन्ति मिथ्याचारप्रवर्तकाः ॥ ६ ॥
यज्ञदानतपःकर्म स्वाध्यायनिरतो भवेत् । एष एव हि श्रुत्युक्तः सत्यधर्मः सनातनः॥ ७ ॥
सत्यं शरणं गच्छामि । सत्यधर्मं शरणं गच्छामि । सत्यधर्मसङ्घं शरणं गच्छामि ।। (३ वेळा)
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ।।

।। अनंतकोटी ब्रह्मांडनायक राजाधिराज योगीराज
श्री सच्चिदानंद परब्रह्म सद्गुरू श्री स्वामी समर्थ महाराज की जय ।।
।। अवधूत चिंतन श्रीगुरुदेव दत्त ।।
।। स्वामी ॐ ।।